Chap-4

-: चतुर्थ- अध्याय :-

" कृति- परिचय "

कृति- परिचय .... भाग-§2§

सन् 1960 के पश्चात् के उपन्यासकारों की कृतियों में नयी मानसिकता तनाव व तीव्र काम कुण्ठा, नग्न यथार्थ, फैशनपरस्ती, आधुनिकता तथा परिवेशगत जटिलताओं का गहराई से चित्रण मिलता है । इन उपन्यासकारों के पात्र उद्देश्यहीन भटके हुये, संस्कारहीनता, आदर्शहीनता, मूल्यहीनता तथा अर्थ व काम को लेकर परम्परागत मूल्यों से विद्रोह करते हुए चित्रित होते हैं । इनके उपन्यासों में परिवेशगत जटिलता के कारण , बदलते हुये दाम्पत्य जीवन मूल्यों, नारी स्वातंत्र तथा आर्थिक निर्भरता से उत्पन्न स्थितियों, पति-पत्नी की "स्व-अस्तित्व" की भावना के कारण उत्पन्न मन-मुटाव की परिस्थितियों तथा तलाक आदि का चित्रण पर्याप्त रूपेण मिलता है । इन उपन्यासों में एक बड़ा अन्तर यह है कि - इनके पात्र सशक्त, वैयक्तिक चेतना से युक्त तथा जीवन से संघर्षरत हैं, जबकि पूर्वयुगीन लेखकों के उपन्यासों के पात्र अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित नहीं कर पाते हैं । उनमें साहस की कमी दिखाई देती है । इसी कारण सीमित दायरे में घिरे-सिमटे रहते हैं। यह अन्तर शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव, औद्योगीकरण, शहरीकरण से आया है - ऐसा हम पूर्ववर्ती अध्यायों में स्पष्ट कर चुके हैं । आज व्यक्ति में बौद्धिकता, तथा व्यक्ति चेतना का विकास सम्यक् रूपेण हो चुका है इसलिए वह निसंकोच परम्परागत मूल्यों को नकार रहा है । नारी में सबसे अधिक चेतना परिलक्षित होने से मूल्यों में अधिक टकराहट उत्पन्न हो गई है । इसीलिए आज के उपन्यासों में - स्त्री-पुरुष के संबंध नये दृष्टिकोणों में चित्रित हैं, विवाह पूर्व शारीरिक संबंध स्थापित होना, वैवाहिक जीवन में स्वच्छंद यौन वृत्ति को अपनाने के कारण उत्पन्न विषम स्थितियाँ, आदि चित्रित हैं ।

आज के उपन्यासों का प्रधान विषय मध्यम वर्ग §उच्च, मध्यम व निम्न§ रहा है । विशेषकर मध्यम व निम्न मध्यम वर्ग । क्योंकि ये ही आज द्विविधात्मक मन:स्थिति के शिकार हैं । यह "वर्ग" न तो मूल्यों को तोड़ ही पा रहा है

न अपना रहा है । आर्थिक संकटग्रस्त होने पर भी सामाजिक संबंध बनाये रखने को विवश है । इसीलिए इसकी कुण्ठा, निराशा, संघर्ष व उलझन की स्थिति को उपन्यासकारों ने सही अभिव्यक्ति दी है । अर्थ के असमान वितरण के कारण "वर्ग संघर्ष" का चित्रण भ्रष्ट व राजनीति या नेताओं पर व्यंग्य भी आज के उपन्यासों का विषय बना है । इन उपन्यासकारों में - श्री लाल शुक्ल ﴾राग दरबारी﴿ अलग अलग वैतरणी﴿ शिव प्रसाद सिंह, मन्नू भंडारी﴾महाभोज﴿ आदि। नारी स्वतंत्रता व आधुनिक नारी की भटकन तथा स्वच्छंद यौन वृति का चित्रण- उषा प्रियंवदा ﴾रूकोगी नहीं राधिका﴿ कृष्णा सोबती ﴾सूरजमुखी अँधेरे के﴿ ﴾डाक बंगला﴿ कमलेश्वर ﴾ वे दिन﴿ निर्मल वर्मा आदि उपन्यासकारों ने किया है । आज सरकारी दफ्तरों में फैले भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद का चित्र ﴾चिड़ियाघर﴿ गिरिराज किशोर ने प्रस्तुत किया है । मोहन राकेश ने दाम्पत्य जीवन की जटिलताओं का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज के उपन्यास व्यक्ति मन की घुटन झुंझलाहट को प्रस्तुत कर रहे हैं । व्यक्ति के प्रति नई संवेदना, सहानुभूति रखते हुए नये मूल्य और नई मान्यताएं स्थापित कर रहे हैं । किन्तु इसके अतिरिक्त कुछ उपन्यासकार ऐसे भी हैं, जो समकालीन विषम परिस्थितियों में परम्परागत मूल्यों व नवीन मूल्यों के द्वंद्व को चित्रित करते हुये , परम्परागत मूल्यों की स्थापना पर बल दे रहे हैं । इनमें सुरेश सिन्हा ﴾सुबह अँधेरे पथ पर﴿ तथा नरेश मेहता ﴾यह पथ बंधु था﴿ उल्लेखनीय हैं । समकालीन उपन्यास नवीन शिल्पगत विशेषताओं से युक्त हैं । यहाँ जीवन मूल्यों की दृष्टि से कृतियों का परिचय किया जा रहा है :----

1- "अँधेरे बंद कमरे" -﴾1961﴿ मोहन राकेश

मोहन राकेश कृत "अँधेरे बंद कमरे" उपन्यास आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं का चित्रण है । आपसी मनमुटाव की भावना,

स्त्री-पुरुषों और व्यक्ति व्यक्ति के बीच बनते बिगड़ते हुए सामाजिक और व्यक्तिगत संबंधों की कहानी है । लेखक ने स्त्री-पुरुष व पति-पत्नी के नये संबंधों का चित्रण नये परिवेश में किया है । व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा नारी स्वातंत्र्य और समान अधिकार की भावना को प्रदर्शित किया है । "अँधेरे बंद कमरे" में सदियों से चले आ रहे पारिवारिक भावात्मक संबंध बौद्धिक धरातल पर टूट रहे हैं । नारी ,स्वातंत्र्य भावना को लेकर सामाजिक परम्पराओं को तोड़ रही है । किन्तु व्यक्ति अधिकार भावना को शाश्वत मान रहा है । इसीलिए हरवंश मूल्यों की बात करता है , और नीलिमा नारी स्वातंत्र्य भावना को महत्त्व देती है , हरवंश रूढ़िवादी है , तो नीलिमा किसी भी व्यक्ति से बात कर सकती है । स्वच्छंद जीवन के प्रति लालायित होती है । इसीलिए यह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास मूल्यहीनता, उद्देश्यहीनता, बेकारी, आर्थिक संघर्ष , मानसिक तनाव एवं जिजीविषा का चित्रण करता है । इसके पात्रों में सद्भाव ,सहानुभूति, त्याग, कर्तव्य, हमदर्दी आदि का अभाव रहता है । इसके स्थान पर व्यक्ति समानता, स्वतंत्रता, महत्वाकांक्षा अधिकार ,लालच आदि प्रवृत्तियों को महत्व दिया गया है ।

उपन्यास का केन्द्र दिल्ली महानगर है । इसके साथ ग्रामीण परिवेश का भी उल्लेख है । ग्रामीण परिवेश में थोड़ी बहुत पहचान ठाकुराइन के साथ मधुसूदन करता है । लेखक ने वहाँ की भावुकता, सहयोग, हमदर्दी, सौहार्द्र, सद्भाव आदि का चित्रण शहरी परिवेश में किया है । महानगरों का जीवन एकदम, कृत्तिमता, औपचारिकता, आडम्बरयुक्त उच्च स्तर की आकांक्षा वाला तथा मशीनों के साथ चलने वाला, अजनबी, रिक्तता व अविश्वासपूर्ण है । क्योंकि यहाँ पति पत्नी , भाई-बहन, माँ-बेटा आदि सभी धन तक सीमित हैं । इसीलिए वह सजग और सचेत है, जीवन से हारा हुआ है । वह विसंगति का त्याग कर संगति चाहता है , उसे अपने जीवन के टुकड़े मिलते हैं, वह सुषमा जैसी आधुनिक नारी व आत्मनिर्भरता को छोड़कर कस्साबपुरा की निम्मा के साथ विवाह करता है । वह शहरी कृत्रिम जीवन से ग्रामीण वातावरण में आकर संतोष की साँस लेता है ।

युगीन परिवेश में व्यक्तिगत व सामाजिक मूल्यों को सुषमा और नीलिमा नकारती हैं । वे नये संबंध बनाती है । पुराने रिश्तों को तोड़ती है । यह कहा जा सकता है कि लेखक ने आज के परिवेश में दिल्ली महानगर के बीच मध्यवर्गीय जीवन के बनते बिगड़ते संबंध, तनाव व कुण्ठा की स्थिति, आत्मरति, फैशनपरस्ती, आकाक्षाएं ,आधुनिक चकाचौंध,नये विचार तथा नये दृष्टिकोण का चित्रण किया है । पति पत्नी के रूप में हरवंश तथा नीलिमा व्यक्तिगत, सामाजिक , धार्मिक, आर्थिक तथा नैतिक वैचारिक द्वन्द्व में फंसकर एक दूसरे के प्रति संघर्षरत हैं । हरवंश नीलिमा को सफल आर्टिस्ट बना देता है । वह महत्वाकाक्षा लेकर सांस्कृतिक क्लब का सेक्रेटरी बन जाती है । नृत्य के कारण वह प्रसिद्ध होना चाहती है । किन्तु वह कुशल गृहिणी नहीं बन पाती है । और आधुनिकता के मोह में नारी स्वातंत्र्य की भावना से प्रेरित रहती है । तो हरवंश अपना अधिकार चाहता है । इस संघर्ष में पारिवारिक मूल्य टूटते हैं और टूटती है अपने बच्चे के प्रति वात्सल्य की भावना । अतः नीलिमा और हरवंश का पारिवारिक जीवन "अंधेरे बंद कमरे" में सिमट जाता है । वे दोनों "बंद अंधेरे कमरे" से निकल नहीं पाते हैं और न ही संकीर्णता की दीवारों को तोड़ पाते हैं । यह तनाव तथा कुण्ठग्रस्त स्थिति न तो नीलिमा को सफल नर्तकी बनने देती और न हरवंश को साहित्यकार । यह उपन्यास पति-पत्नी के मध्य सह अस्तित्व और स्वतंत्र व्यक्तित्व की समस्या से सम्पृक्त है । यही कारण है कि नीलिमा परम्परागत आदर्श, विचार, मर्यादा तथा प्रतिमान को महत्व नहीं देती है । जबकि हरवंश इन विचारों से जुड़े रहते हैं । यह भावन व्यक्तिगत जीवन में तनाव की स्थिति उत्पन्न करती है । इससे ममता, मातृत्व, नारीत्व,गार्हस्थ्य आदि जीवन-मूल्य स्थापित नहीं हो पाते हैं ।

"अंधेरे बंद कमरे" में आपसी मनमुटाव, विचार-संघर्ष, पति-पत्नी पर एकाधिकार की भावना रखता है । और पत्नी इससे दकियानूस कहकर नकारती है । सुरजीत हरवंश को रिकार्डप्लेयर देकर, उससे शुक्ला को उठा लेता है । कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत नये दृष्टिकोण नयी मानसिकता तथा स्वछंद

यौन चेतना से परम्परागत मूल्य टूटे हैं । नयी वैचारिकता, शाश्वत जीवन-मूल्यों को चुनौती देती है । इस प्रकार डा0 राम गोपाल सिंह चौहान इस बात का समाधान करते हैं :- " वर्तमान जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की विभिन्न समस्याओं और स्थितियों तथा जीवन-मूल्यों के संघर्ष का सफल चित्रण किया है ।"

इस उपन्यास में प्रेम, यौन संबंध, सद्भाव, सहृदयता,सौहार्द्र, पारिवारिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन मूल्यों का विघटन व्यक्ति चेतना तथा शिक्षा के कारण हुआ है । पारिवारिक जीवन में नये परिवेश के साथ सेवाभाव, आद आदि मूल्यों में औपचारिकता आगयी है । वैवाहिक जीवन की अर्थहीनता, दिशाहीनता, तथा मुल्यहीनता का चित्रण शुक्ल और सुरजीत के लव मैरिज करने पर और नीलिमा तथा हरवेश के आपसी कलह तथा नीरसता के कारण पारिवारिक मूल्यों का विघटन हुआ है । उपन्यास में हरवेश और नीलिमा के कृत्रिम व्यवहार से, अलगाव, त्याग, प्रेम, सद्भाव, एकता,प्रेम संबंध तथा सेवा भाव के मूल्य टूटे हैं । वैयक्तिक चेतना तथा नयेपन के मोह में उसने सामाजिक संस्कारों के बंधनों को तोड़ा, शुक्ला और सुरजीत के प्रेम-विवाह के कारण , धर्म , जाति, परिवार टूटे हैं । इससे मानवीय संबंधों में विषमता, शून्यता, स्नेहहीनता, अकेलेपन आदि प्रवृत्तियों का उदय हुआ । इसमें यौन संबंधों को "पार्ट टाइम" की संज्ञा दी गयी है । पत्नी को उच्च पद प्राप्त करने का साधन माना गया है । यह कहना ही उपयुक्त होगा कि यह उपन्यास आधुनिक संस्कृति का स्वीकृति में शारीरिक पवित्रता, ब्रह्मचर्य व नारीत्व को नकारता हुआ, बुद्धिवादी स्तर पर भावुकता को कम कर, नारी धर्म पातिव्रत्य, सेवाभाव को फैशनवादी दुनिया में महत्वहीन माना है । व्यक्तिवादी अंह और "स्व" की प्रवृत्ति का चित्रण " काम" और "अर्थ" के आधार पर किया है ।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इस कृति में समसामयिक जीवन-मूल्य अपनी नयी चेतना के साथ उभर कर आये हैं । भले [redacted] ही उनमें से कुछ का प्रसार कुछ पूर्ण पूर्ववर्ती युग में रहा है ।

2- "डाक-बंगला" ॥1962॥ कमलेश्वर

कमलेश्वर ने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" ॥1961॥ डाक बंगला ॥1962॥ काली आँधी ॥19 ॥ लौटे हुए मुसाफिर ॥1963॥ और तीसरा आदमी ॥1964॥ लघु उपन्यासों में प्राय: नये जीवन-मूल्यों और वर्गगत विषमताओं के साथ नारी-पुरूष के बनते बिगड़ते संबंधों का चित्रण किया है । लेखक ने नारी स्वातंत्र्य भावना और व्यक्ति चेतना के साथ उनके यौन संबंधों का व्यापक रूप से चित्रण किया है । नारी के आत्मनिर्भरता तथा शिक्षित होने के कारण वह आज स्वाधीनता अनुभव करती है । प्राचीन काल से चले आ रहे रूढ़ियों ,सामाजिक मान्यता तथा नैतिकता को स्वातंत्र्य की भावना के कारण उतार फैंका है । वह समाज में आज स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है । अत: लेखक ने पारिवारिक,सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक जीवन-मूल्यों में संक्रमण दिखाया है । नये मूल्य बन नहीं पाये, पुराने मूल्य टूट रहे हैं ।

"डकक-बंगला" उपन्यास में विधवा, इरा कश्मीर यात्रा के दौरान तिलक और सोलंकी के साथ पहलगाम के आड़ "डाक-बंगला" में आकर रहती है । वह मध्यमवर्ग की शिक्षित नारी है , वह अपने यौवन कीसीढ़ी से फिसलकर, नाटकार विमल के प्रेमपाश में बद्ध हो जाती है, जो उसे रंगमंच का प्रलोभन देकर, उसे अपनी वासना का शिकार बना लेता है । इस प्रकार इरा का जीवन ,अनेक उतार-चढ़ाव , अच्छाई, बुराई, सौन्दर्य और कुरूपता के मध्य टूट जाता है । अत: उसका जीवन अन्त तक नारकीय जीवन बना रहता है । जिन व्यक्तियों ने उसके साथ भोगविलास किया, वह इस प्रकार अभिव्यक्त करती है । "मेरी यादों का कोना कोना यादों से भरा हुआ है । मेरी आँखों में हर व्यक्ति की तस्वीर जिसके साथ मैंने थोड़े से भी दिन गुज़ारे हैं ······· सभी ने विलास किया है ,मेरे साथ------" इरा और विमल का स्वच्छंद सहवास आर्थिक विषमता के कारण जल्दी टूट जाता है । वह महेन्द्र बतरा दलाल के हाथ में इरा को सौंप देता है । बतरा के साथ इरा अवैध संबंध रखने से गर्भवती हो जाती है और वह

गर्भपात करवा देता है । बाद में शील का संबंध बतरा से हो जाता है । इरा एक बूढ़े डाक्टर के साथ शादी करके असम चली जाती है और कुछ दिनों के पश्चात् पुनः विधवा हो जाती है । इस प्रकार "डाक बंगला" में इरा के वैविध्य जीवन की कहानी पूर्वदीप्ति शैली के माध्यम से अभिव्यक्त की गई है ।

व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन मूल्यों का पतन विमल, बतरा, तिलक, शील आदि पात्रों के जरिये होता है । विमल समस्त सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को त्याग कर इरा से अवैध संबंध रखता है । इरा के जीवन में बतरा दलाल आता है तो वह विधवा से सधवा बन जाती है किन्तु उसे सामाजिक सनद नहीं मिलती है । बतरा समाज के बड़े बड़े लोगों की बीबीओं से कान्टेक्टस लेता है और सभी औरतों से अवैध संबंध रखता है । वह किसी भी कान्टेक्टस को शील नामक स्त्री के माध्यम से हल करवाता है । ये सभी पात्र व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को लेकर चलते हैं । अतः उच्चशिक्षित नारी परम्परागत जीवन-मूल्यों को त्याग कर, आत्म गौर महसूस करती है । शीला शारीरिक भूख तथा अर्थ अर्जन के लिए स्वच्छंद यौन वृत्ति को अपनाती है ।

यह कहा जा सकता है कि "डाक बंगला" उपन्यास स्त्री पुरूष के स्वछंद यौन वृत्ति तथा " अर्थ " समस्या पर आधारित है । नारी पात्र नैतिक तथा आचरण संबंधी सभी मूल्यों को त्यागती हुई सामाजिक जीवन-मूल्यों को नगण्य मानती है । किन्तु भारतीय संस्कार उनमें विद्यमान होने पर ,उनके अन्तर्गत में अपना एक नन्हा-सा घर बसाने की अपूर्व कामना भी विद्यमान है । जबतक समाज में बतरा जैसे औरतों के दलाल रहेंगे, तब तक उनकी मनोकामना कैसे सिद्ध हो सकती है । इरा यही चाहती है कि "एक नन्हा-सा घर बनाकर रहूं ।" अतःउपन्यास में स्त्री पुरूष के शाश्वत संबंध की कामना की गई है । अच्छाई के साथ बुराई, सुन्दरता के साथ कुरूपता आदि का अंकन किया गया है । सद्भाव, सहयोग, सच्चाई तथा भलाई डाक बंगले के पांचों के अन्तर्मन के किसी न किसी कोने में विद्यमान अवश्य है जो युगीन परिवेश में धूमिल हो रहे हैं । यह उपन्यास साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों को उद्घाटित करता है । इरा मानसिक कुंठा, तनाव तथा अकेलेपन की स्थिति में आकर कहती है कि -

"मै सिर्फ आदमी को प्यार करती हूं।" किन्तु आदमी में आदमियत कहाँ ? सब के सब पशु हैं । यह उपन्यास निसन्देह मानवीय दुर्बल प्रवृत्ति को उद्घाटित "सेक्स विकृति" तथा " अर्थ" आधार पर किया है । युगीन परिवेश में व्यक्ति चेतना के कारण मानव-मूल्य टूट रहे हैं ।

3- "मंजिल से आगे [1962] - महावीर अधिकारी"

महावीर अधिकारी कृत "मंज़िल से आगे" उपन्यास जीवन-दर्शन से ओत-प्रोत है । उपन्यास में "प्रेम" व "वासना" को लेकर अनेक प्रश्न उभारे हैं तथा विसंगतियों, संघर्ष, विघटन, संयोग-वियोग, हार-जीत आदि के चित्र भी प्रस्तुत किये हैं । "मंजिल से आगे" की कथा संघर्ष की कथा है । और "काम" और "अर्थ" ही इस संघर्ष का मुख्य आधार हैं । "काम" को लेकर कीर्ति, शकुन्तला, नीवा, शान्ता, ब्रेई आदि कुंठित, भयभीत व भटकन तक की स्थिति तक पहुँच गई है । तथा "अर्थ" के संघर्ष में, ट्रेड यूनियन और पूँजीवाद के बीच मजदूर एवं मालिक का संघर्ष विद्यमान है । दिवाकर का जेल जाना, लाठिया खाना आदि भी विर्वा वर्णित हैं ।

इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपना अलग दृष्टिकोण लिये हुए है । नर-नारी के संबंध में अनेक विद्रूपताओं, विषमताओं, का अंकन किया है । शकुन्तला समस्त सामाजिक बन्धन तोड़कर दिवाकर से शारीरिक संबंध कर लेती है और सगर्भा होने पर कोर्ट में शादी कर लेती है । बाद में उनके विकलांग शिशु का जन्म होता है और शकुन्तला की मृत्यु हो जाती है । इस प्रकार दिवाकर का जीवन दुखपूर्ण, निराशापूर्ण तथा उदासीन बन जाता है । वह विकलांग शिशु का इलाज करवाकर स्वस्थ बनाना चाहता है । यहाँ लेखक ने प्रतीक के रूप में लिया है अपंग शिशु यह विसंगतियों से भरा समाज ही है, जो केवल आज बौद्धिकता के सहारे जीना चाहता है । बिना हृदय के अपंग बना यह समाज कैसे चल पायेगा । लेखक प्रकारान्तर से यह प्रश्न उठाता है कि क्या कभी वह इन्सान बन कर समाज में जी सकेगा ? परम्परागत जीवन-

मूल्य का पुनर्स्थापना करने के लिए महान् पुरुषों के पद चिन्हों से मिलकर चलना समाज में संगीत लाना है । आदर्श, संकल्प, आचरण, नैतिक, कर्तव्य, प्रेम, ममत्व, वासना आदि की सही रूप में वयाख्या करनी होगी - हृदय को लेकर बुद्धिवादी स्तर पर नहीं ।

इस प्रकार लेखक ने आज के बदलते हुए संदर्भों में व्यक्ति चेतना को "काम-कुंठा" तथा " अर्थगत" आधार पर अंकन किया है । लेखक ने काम को अर्थ से, यथार्थ को आदर्श से, भावना को कर्तव्य से "स्व" को "पर" के परिप्रेक्ष्य में , पर को "स्व" के संदर्भ में मानव-मूल्यों को संश्लिष्ट संदर्भ में खोज की गयी है । उपन्यास में बौद्धिकता के आधार पर जीवन की समस्त विसंगतियों को उभारा गया है । "काम" तथा "अर्थ" को लेकर व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों की रचना की गई है । प्रेम, करूणा, उदारता, क्षमा, सहिष्णुता, सहानुभूति आदि मूल्यों की स्थापना की गई है । व्यक्तिवादी जीवन दर्शन में स्वतंत्रता ,बंधुत्त्व समानता, नारी के प्रति आदर का दृष्टिकाण , बौद्धिकता, दार्शनिकता आदि तत्त्वों को उदघाटित कियाहै । सामाजिक जीवन-मूल्यों में दायित्व,कर्तव्य, सहयोग, त्याग, क्षमा, सत्य आदि को सम्मिलित किया गया है ।

4- "वे-दिन" ॥1964॥ - निर्मल वर्मा "

निर्मल वर्मा कृत "वे-दिन" उपन्यास आधुनिक धरातल पर व्यक्तिवादी व अस्तित्ववादी दृष्टिकोण को लेकर, यूरोप के युद्धोत्तर जीवन की पृष्ठभूमि पर, व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाओं, संवेदनाओं और कार्य-कलापों पर लिखा गया है । मानवता को युद्ध ने नवीन अनुभूतियों, संवेदनाओं एवं अभिवृत्तियों के साथ जीवन व्यतीत करने पर विवश कर दिया है । आधुनिक बोध की विसंगतियों व परिस्थितियों के कारण नर-नारी के शाश्वद मूल्यों में जो, रिक्तता, अजनबीपन, कर्तव्यहीनता एवं मूल्यहीनता की, स्थिति उपस्थित हो गई है, उसे लेखक ने यहाँ बखूबी उभारा है । इस उपन्यास के प्रत्येक पात्र युद्ध की विभीषिका से भयभीत , कुंठित, अकांगी, व निराशयुक्त हैं । वह अतीत व भविष्य को भूलकर केवल वर्तमान देख रहा है ।

उपन्यास के मुख्य पात्रों में एक पति परित्यक्ता नारी, गाइड, रायना, फ्रांज, टी० टी और मरिया हैं । ये एक दूसरे से नितान्त अजनबी हैं । शारीरिक संबंध बनाये हुए भी एक-दूसरे को पहचानते तक नहीं । उपन्यास के पात्र उलझे हुए संबंधों और परिवेशगत जटिलताओं से जूझते हैं । वे एक दूसरे के प्रति सद्भाव, सहानुभूति, दया, करूणा, प्रेम आदि, जातियता, राष्ट्रीयता व रंग भेद को भुलाकर रखते हैं किन्तु सामाजिक दायित्व तथा कर्तव्य च्युत हैं । व्यक्ति अपने प्रति जागरूक है समाज के प्रति नहीं और न ही पारिवारिक मूल्यों को महत्त्व देते हैं केवल क्षणिक मिलन को मानते हुए रायना और कथा नायक समाज के सांस्कृतिक , नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को नकारते हैं । उनके लिए आदर्श, संयम, आदि का कोई महत्त्व नहीं है । "मैनें अपने होंठ उसके मुंह पर दबा दिये । मुझे लगा मेरी सांस रूक सी गई ---- कमरे का अंधेरा एक मैले चित्र सा मेरी आंखों के सामने फड़फड़ाने लगा ।"[3]

रायना को आधुनिक स्वतंत्र विचारों वाली नारी के रूप में चित्रित किया है । रायना का न तो अपने पति, और न अपने पुत्र "मीता" के प्रति मोह है । वे अपने बेटे को थोड़े थोड़ समय के लिए बांट लेते हैं -- "हमेशा नहीं हम उसे बांट लेते हैं ।---- पिछले एक साल की छुट्टियों में वह जोक के संग था । उसी के साथ युगोस्लाविया गया था । अब पिछले कुछ महीनों से मेरे साथ है ।"[4]

"वे-दिन" उपन्यास भटकन, बिखराव, भय व तनाव से परिपूर्ण है । इसलिए इस उपन्यास के बारे मे कहा जा सकता है कि "इसमें उपन्यास की गरिमा नहीं है , कथानक नहीं है , परिवेश का उभार नहीं है, उद्देश्य का उठान नहीं है, बिखराव ही बिखराव है ।"[5]

इस प्रकार उपन्यास "वे-दिन" के पात्र परम्परागत दाम्पत्य व वात्सल्य कर्तव्य आदि मूल्यों को न मानते हुये, प्रेम, सद्भाव, सहानुभूति आदि को नवीन दृष्टिकोण से परख रहे हैं । कुल मिलाकर अंत में कहा जा सकता है कि यह उपन्यास वैयक्ति चेतना से युक्त उपन्यास जिसमें घुटन, तनाव, अजनबीपन का वातावरण बना हुआ है ।

5- "मछली-मरी हुई" {1966}

- "राजकमल चौधरी"

राजकमल चौधरी कृत "मछली-मरी हुई" उपन्यास विकृत यौन वृत्ति पर आधारित है । यह उपन्यास कल्पनिक है, इसे लेखक ने भी स्वीकारा है, इसी कारण इसमें यथार्थ की "अति" हो गई है । समलिंगी यौनाचार पर कम किताबें क्यों लिखी गई है ? हमारे देश में जमाना कब क्यों नहीं है ? आदि प्रश्नों ने "मछली-मरी हुई" नामक उपन्यास को जन्म दिया है ।

इस उपन्यास में वैयक्तिक चेतना को वैयक्तिक काम स्वतंत्रता व कुंठा तथा उच्छृंखलन वासना के आधार पर चित्रित किया है । पद्मावत की काम तृप्ति न होने के कारण, वह जीबोगरीब हरकत करता है । "निमल बाबू अपने दफ्तर के बदमाश कर्मचारियों को और शहर के ऊंचे इलाके से उठाकर लाई गई जवान औरतों को कतार में खड़ी करके नंगी कर देते हैं और चाबुक से पीटते रहते हैं । बदमाश कर्मचारी चीख-पुकार तक मचा नहीं पाते । औरतें नंगी होकर पीटने से पहले ही बेहोश हो जाती हैं ---- मर जाती हैं ।"[6] निर्मल दूसरी अ= स्त्रियों के साथ भी यौनाचार करता है किन्तु "न्यूरासिस" का रोगी होने के कारण हर बार अतृप्त रह जाता है । उसकी पत्नी शीरी "होमो सेक्सुअलिटी" की मरीज है । उसे आत्मरति में ही सुख मिलता है । कल्याणी जो निर्मल की प्रेमिका थी वह भी काम-पिपासा को शान्त करने के लिए डा० रघुवंश से शादी कर लेती है । उनकी बेटी प्रिय भी शीरी के सम्पर्क में आने से होमो सेक्सुअलिटी की मरीज हो जाती है । तात्पर्य यह है कि निर्मल शीरी, प्रिया अपनी यौन अपृत्पि के कारण आसाचारण हैं । किन्तु एक अप्रत्यक्ष घटना घटती है । निर्मल प्रिया के साथ बलात्कार करता है तो उसका पौरुषत्व जाग उठता है, इसके साथ प्रिया व शीरी भी नार्मल {साधारण} हो जाती हैं।

इस प्रकार "मछली मरी हुई" वैयक्तिक, यौनाचारों, यौन विकृतियों व अतृप्त काम वासनाओं से उत्पन्न आसाधारण स्थितियों का चित्रण करता है । लेखक ने फ्रायडवादी यौन सिद्धान्त को मानते हुए यह सिद्ध किया है कि "काम

वासना" प्रत्येक जीवनधारी प्राणी के लिए आवश्यक है । इसके अभाव में व्यक्ति असाधारण, कुंठित व पौरुषहीन हो जाता है ।

इस उपन्यास में हम पाते हैं कि आधुनिक युग परिवेश के कारण तथा फ्रायडवादी सिद्धान्त के प्रभाव के कारण उत्पन्न हुई काम कुण्ठा स्थिति से हमारे परम्परागत नैतिक व धार्मिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह भी लगा है ।

6- "आधा गाँव" (1966)

- राही मासूम रजा,

राही मासूम रजा कृत "आधा गाँव" उपन्यास गाँव गाँव की विसंगतियों विद्रूपताओं तथा जटिलताओं को उजागर करता है । इसमें ग्रामीण जीवन की आर्थिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत ,सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के विघटन का चित्रण है । इसमें सच्चाई की तीव्रता और बेबसी के साथ चित्रित करके[7], गंगोली गाँव के शिया मुसलमानों का स्वाधीनता पूर्व पश्चात् की सामन्तशाही जीवन की परम्पराओं ग्रस्त जीवन की झाँकी है । भारतीय मुस्लिम[8] जाति की मन:स्थिति, चिन्ताओं, कुण्ठा, संत्रास और बेबसी का चित्र है । "आधा गाँव" के समस्त फुन्नज मियाँ, फिस्सू मियाँ, अली इम्माद, मौलवी बेदार, फिस्सूमियाँ, परम राम, सैफुनिया आदि पात्र मानसिक तनाव तथा आपसी मनमुटाव से भरे हुए हैं । इसके साथ वे ससीमाओं, सम्भावनाओं के साथ पारिवारिक तनाव, सम्मिलित परिवार के टूटन के मूल्य, सेक्स के कारण बनते बिगड़ते संबंध, और मान-प्रतिष्ठा ,उनकी परम्परागत मान्यता, विश्वास ,सुख दुख, ईर्ष्या आदि प्रवृत्तियों का चित्रण है ।

व्यक्तिगत जीवन में नये दृष्टिकोण ,मानसिक कुण्ठाएं, तनावों की स्थिति और परिवर्तित लोक जीवन की आस्था व विश्वास के साथ, मुस्लिम जीवन की परम्परा के प्रति विद्रोह की चेतनात्मक मूल्यों का चित्रण गंगोली गाँव को केन्द्र मानकर किया गया है । नैतिक मूल्यों का वहाँ पर कोई मूल्य नहीं है ।[9] अब्बू मियाँ की सईदा व्यक्तिगत जीवन में स्वच्छंद यौन वृत्ति को महत्व देती है [10] गंगोली गाँव की लड़कियाँ बिना किसी भेदभाव के शारीरिक

संबंध स्थापित करती हैं । सईदा न तो जातीयता तथा न कोई वर्ग भेदभाव को स्वीकारती है ।

सामाजिक जीवन में गंगोली गाँव के मुस्लिम जाति पाकिस्तान के बन जाने पर टूटते हुए परिवार, टूटते हुए कुटुम्ब के संबंध और टूटते हुए परिवेश का अनुभव करते हैं । उपन्यास में हिन्दू मुस्लिम के पारिस्परिक संबंध तथा प्रेम में ईर्ष्या की गाँठ पड़ गयी है । सदभाव, एकता, प्रेम, सहयोग, साहचर्य तथा संबंध सभी आपसी दाह में टूट रहे हैं । पाकिस्तान का अर्थ हिन्दू मुसलमान को अलग करना नहीं बल्कि मियां को बीबी से, बाप को बेटे से, भाई को बहिन से अलग करना है ।[11] स्वाधीनता आई तो जमींदारी गयी और गाँव के मुसल मानों की आर्थिक दशा कमजोर हो गयी क्योंकि उनकी आर्थिक आधार का स्रोत जमींदारी थी । इससे पारिवारिक जीवन में जटिलताएं तथा अर्थगत विषमताएं आ खडी हो गयी । सम्मिलित कुटुम्ब लघु परिवारों में विभक्त हो गये । युगीन परिवारों के व्यक्ति विज्ञान के उपादानों तथा भौतिक सुख-साधनों के कारण उनका जीवन, ऐश्वर्य, भोग-विलास पूर्ण व आलसी हो गया । नये परिवेश ने, नये मूल्य , तथा नये सामाजिक वर्ग दिये । इसके साथ सामाजिक जीवन-मूल्यों का ह्रास हुआ और व्यक्ति असंतोष, आत्म पीड़ित, उत्पीड़िन तथा निराशापूर्ण हो गया । वह सामाजिक रीतियों व परम्पराओं, के प्रति विद्रोह करने लगा तथा जातीयता के बंधन शिथिल होते गये । साथ हीनैतिक, आध्यात्मिक मान्यताओं का बिखराव और स्वातंत्र्य, जातीय समानता, आत्म प्रतिष्ठा के नये मूल्य विकसित हुए । यह आधा गाँव संयुक्त परिवार की त्रासदी है । गंगोली गाँव में सामन्ती और जमींदारी व्यवस्था के टूटन से प्रतिष्ठा और मर्यादा धार्मिक और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होने लगी ।

गंगोली गाँव में बदलाव राजनीतिक चेतना के कारण तीव्र गति से आ रहा है कि गलियों में कांग्रेस की दुहाई और देते हैं और सभा जुलूस करते हैं । जमींदारी उन्मूलन के साथ साथ बड़े बड़े किसानों ने राजनीतिज्ञों तथा कर्मचारियों से सांठ-गांठ जोड़ ली है । राजनीति ने व्यक्ति चेतना को विकसत

किया और गाँव में ईमानदारी, अच्छाई, सच्चाई , भलाई आदि के मूल्य टूट रहे हैं । आज की राजनीति स्वहित तक सीमित हो गयी है । इससे सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन-मूल्यों का विघटन हुआ है । गाँव में ज्यों ही जमींदारी व्यवस्था खत्म हुई तो एक छुटभैया नये वर्ग का जन्म हुआ । शिक्षा विज्ञान तथा औद्योगिक विकास ने भी परम्परा जीवन मूल्यों को प्रभावित किया । उभरते हुए इस वर्ग ने राजनीतिज्ञों के साथ मिलकर जनता से रूपया रूपया ऐंठते हैं । इससे भ्रष्टाचार, षड्यंत्र, रिश्वतखोरी आदि दुर्बलताएं समाज में पनप रही हैं । उपन्यास के शोषित और दलित वर्ग आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में समानता के लिए संगठित होकर संघर्षशील हैं ।

अत: यह कहा जा सकता है कि उपन्यास मे व्यक्तिगत सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन-मूल्यों का ह्रास "काम" तथा अर्थ के आधार पर है । वैज्ञानिक विकास तथा औद्योगीकरण के कारण उनमें भोगवादी प्रवृत्ति का विकास हो रहा है । पारिवारिक जीवन अर्थ तथा स्त्री पुरूष के स्वच्छंद यौन वृत्ति के साथ साथ परस्पर के मूल्य टूट रहे हैं । समाज में नयी वर्ग चेतना परम्पराओं के प्रति विद्रोह की चेतना, जातीयता के भेदभाव का बहिष्कार तथा नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा रहा है । नारी चेतना तथा व्यक्ति चेतना के भाव प्रमुखर हो रहे हैं । संक्षेप में कहा जाय कि "आधा गाँव" व्यक्तिगत, समाजगत, आध्यात्मिक तथा राजनीतिक मूल्यों के ह्रास का उपन्यास है । व्यक्ति के आत्म केन्द्रित हो जाने पर सौहार्द्र, सहानुभूति, अहिंसा, सदभाव, दायित्व ,एकता, सहयोग आदि के मूल्य टूटते चले गये हैं । उनके स्थान पर कोई नये मूल्य नहीं बन पाये हैं । पुराने जीवन-मूल्यों संक्रमण की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं । यह उपन्यास आजादी के समय के मूल्यों को उदघाटित करता है ।

7- "सुबह अँधेरे पथ पर" §1967§

- सुरेश सिन्हा

सुरेश सिन्हा ने साठोत्तरी युग में कई उपन्यास लिखे हैं जो नयी अर्थवत्ता तथा नये आचारों-विचारों एवं नयी संवेदनाओं को उद्घाटित करते हैं । इन्होंने अपने उपन्यासों में , द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् भारतीय जीवन की अनेक संगतियों विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का सफल चित्रण किया है । "सुबह अँधेरे पथ पर" में विशेषत: उन जीवन-मूल्यों का संघर्ष चित्रित किया गया है , जिनका अभ्युदय स्वाधीनता के पश्चात् हुआ । देश में स्वाधीनता का स्वप्न था, मंगल कामना के लिये, जन कल्याण के लिए तथा सभी को समानता के अवसर प्राप्त होना । किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय समाज और अधिक शोषण का शिकार हो गया है ।

सुरेश सिन्हा के उपन्यास "एक और अजनबी §1961§ "सुबह अँधेरे पथ पर §1967§,पत्थरों का शहर§1971§ हैं । लेखक ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं तथा विद्रूपताओं के अंकन के साथ साथ , परिवेश गत अर्थहीन व महत्वहीन मूल्यों का चित्रण भी बड़ी सूक्ष्मता से किया है । इस उपन्यास में परम्परागत आदर्श, दृढ़ता, संकल्प, भाग्यवादिता आदि मूल्यों को यथार्थता के साथ परखा गया है, और जीवन के बदलते हुये चित्र तथा उपेक्षित मर्यादाएं नये संदर्भ से देखी गई हैं ।

"सुबह अँधेरे पथ पर" में मध्यम वर्ग विशेषत: निम्न मध्य वर्ग की विवशताओं एवं दुर्बलताओं का चित्र उपस्थित किया है । आज निम्न मध्यम वर्ग सब से अधिक विडम्बनाओं का शिकार है । वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए वह झूठा प्रदर्शन करता है और दिखावे व झुठलावेपूर्ण जिन्दगी जी रहा है । इस वर्ग का अपना कोई अर्थ नहीं, अस्तित्व नहीं और मूल्य नहीं है । यह न तो उच्च वर्ग का दम्भ स्वीकार करता है न निम्न वर्ग की स्थिति को । इसी विडम्बना ने उसे अस्तित्वहीन बना दिया है । लेखक ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार के , आर्थिक संकट से जूझते, परमात्मा बाबू के आन्तरिक

खोखलेपन, तथा विशतापूर्ण जीवन का चित्रण किया है । घर की मूल्य-मर्यादा तथा प्रतिष्ठा बनाये रखने की अभिलाषा परम्परागत जीवन-मूल्यों की ओर संकेत करती है । राजू तथा मीरा दोनों आधुनिक विचारों तथा व्यवहारों का प्रतिनिधत्व करते हैं । उनके बदले हुए स्वतंत्र व्यक्तिगत दृष्टिकोण हैं । वे समाज के मूल्यों को बदल देना चाहते हैं, तथा सारे सामाजिक बंधन को तोड़कर एक हो जाना चाहते हैं । "सुबह अंधेरे पथ"पर" अधूरे जीवन का प्रतीक है ,जिसके पात्र संभावनाओं के विकास के लिए तनाव व घुटन की स्थिति में आगे बढ़ने के लिए पग-पग पर ठोकरें खाते हैं ,फिर भी वे संघर्षशील हैं, आशावादी हैं ।इस संघर्ष को समकालीन जीवन के परिप्रेक्ष्य में दृष्टिगत किया जा सकता है । मानवता, दया, करूणा, कर्मठता, अस्तित्व, ममता, प्रेम, सहिष्णुता, आदि शाश्वत मूल्यों का अंकन है । साथ ही प्रतिष्ठा के लिए ग्रंथि,दायित्वहीनता, पलायनवादी , अस्तित्ववादी तथा व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों की ओर संकेत भी करता है । इसके पात्र संघर्ष में टूट रहा है । प्रेमचंद के "गोदान" के पात्रों के समान अर्न्तद्वंद्व तथा मानसिक संघर्ष इस उपन्यास में मिलता है । परमात्मा बाबू आदि से अन्त तक परिवार की प्रतिष्ठा के लिए आदर्शवादी स्तर पर संघर्ष करते हैं । यथार्थ और आदर्श का जो संघर्ष लेखक ने "सुबह अंधेरे पथ पर" में चित्रित किया है , वह हमारी संक्रान्ति कालीन मान्यताओं से सम्पृक्त है। साथ ही दो भिन्न जीवन दृष्टियों तथा जीवन पद्धतियों के बीच का संर्घष है । परमात्मा बाबू, व्यवहारिकता, भावुकता व आदर्श तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना कर व पर बल देते हैं ,परन्तु उनका बेटा राजू जो नयी पीढ़ी का है, कहता है कि जीवन में आदर्श होना चाहिये, किन्तु केवल आदर्श के सहारे संसार में जी सकते हैं क्या ?

उपन्यास में नयी पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी के जीवन-मूल्यों तथा विचारों का द्वंद्व है । राजू पुरानी परम्परागत मान्यताओं तथा रीति-रिवाजों के प्रति आक्रोश प्रकट करता है । आदर्श केवल आदर्श के लिए होना चाहिये, आदर्श के साथ साथ यथार्थ दृष्टि होना भी आवश्यक है । "आदमी शायद आदर्शों एवं सिद्धान्तों के सम्मुख इसलिए माथा टेक देता है ,क्योंकि उसे

यथार्थ के साथ कठोर, सामंजस्य बिठाना पड़ता है ।"[12] उपन्यास आधुनिक जीवन की विकृत्तियों तथा विशेषताओं को प्रस्तुत करता है ।

उपन्यास में नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष में नयी पीढ़ी का राजू परम्परागत जीवन-मूल्यों को अस्वीकार करता हुआ, समाजवादी तथा मानवतावादी मूल्यों पर जोर देता है ।[13] वह अपनी मौसी की लड़की मीरा से प्रेम करता है । , जो उसके परिवार की प्रतिष्ठा के विपरीत है । वे दोनों आधुनिकता के बोध में पुराने आदर्शों, सामाजिक परम्पराओं तथा गली-सड़ी अर्थहीन संस्कृति के प्रति मौन विद्रोह करते हैं ।[14]

इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि परमात्मा बाबू है । वह सशक्त, आशावान, तथा परिस्थितियों से संघर्षरत आधुनिक होरी है । उसके आदर्श खोखले सिद्ध हो रहे हैं, उसकी मान्यताएं अव्यवहारिक सिद्ध हो रही है । तो भी वह टूटकर गिरता नहीं है , वह भविष्य के प्रति आशा बनाये हैं ,धैर्यवान है । और इन्हीं मूल्यों की आज सबसे अधिक आवश्यकता है ,यही परमात्मा बाबू की पराजय में विजय है । परमात्मा बाबू एक मकान का स्वप्न लेकर जीवन ढोते जाते हैं, वह ~~मकान~~ मकान बना भी लेते हैं किन्तु ~~कृ~~ ऋण के कारण मकान हाथ से जाता रहता है । इस प्रकार वे जीवान्त संघर्षरत रहते हैं किन्तु राजू के सुखी गृहस्थ जीवन की कामना करते हैं । इसीलिए एकस्थान पर कहते हैं कि आदमी आदमी के काम आता है ,आदमी में प्रेम और सहानुभूति होनी चाहिये । वे पाश्चात्य मूल्यों को हीन मानते हैं और अन्त में राजू इन मूल्यों को स्वीकार करता है । इस प्रकार लेखक ने परम्परागत जीवन-मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है ।

लेखक ने इस उपन्यास में राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रकाश डाला है । परमात्मा बाबू कांग्रेसी विचारों से युक्त हैं, तो बल्लभदास सोशलिस्ट ,भ्रष्ट, स्वार्थी तथा अनैतिक रूप से अर्थग्राह्यी नेता ।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यह उपन्यास परम्परागत आदर्श,प्रेम, सौहार्द्र, तपस्या, नैतिकता, ईमानदारी, आदि मूल्यों का प्रतिपादन करता है ।

यहाँ आधुनिक जीवन की अर्थगत समस्याओं का समाधान धैर्य व आस्थावान् मूल्यों के साथ खोजने का प्रयास किया है । यद्यपि व्यक्तिगत मूल्यों के स्थान पर समाज गत मूल्यों को महत्व दिया है तो भी व्यक्तिगत मूल्यों को स्वीकारा गया है । इस प्रकार लेखक सुरेश सिन्हा अपने इस उपन्यास "सुबह अँधेरे पथ पर" परम्परागत मूल्यों के प्रति आस्थावान् रहे हैं ।

8- "रूकोगी नहीं ---- राधिका ‖1967‖

- उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा कृत "रूकोगी नहीं•••••राधिका" उपन्यास व्यक्तिवादी व नारी स्वतंत्रता पर आधारित उपन्यास है । नारी के बदलते हुये जीवन-मूल्यों, नारी की नई अस्तित्व भावना, तथा आधुनिक नारी की विडम्बनाओं का चित्रण लेखिका ने बड़ी गहनता व सूक्ष्मता के साथ किया है । जैसाकि पूर्व विदित है कि स्वतंत्रता पश्चात् काल में तथा उससे पहले विवेकानन्द व अन्य समाज सुधारकों तथा गांधी जी आदि के अथक प्रयास के कारण तथा स्वयं अपने परिश्रम के परिणाम स्वरूप नारी में नई चेतना का आगमन हुआ । किन्तु साठोत्तर काल तक आते आते उसमें अभूतपूर्व बदलाव आया । उसी स्थिति, परिस्थिति तथा उससे उत्पन्न उलझनें, एवं मनस्थिति का अंकन लेखिका ने इस उपन्यास में किया है । इस उपन्यास की नायिका राधिका विरासत में तो भारतीय संस्कार प्राप्त करती है किन्तु बाह्य रूप से स्वच्छंद विचारों वाली आधुनिक युवती होती है । उसमें नारी स्वतंत्रता तथा व्यक्ति चेतना की भावना परिलक्षित होती है ।

राधिका, विदेशी पत्रकार के प्रेम में फंसकर शादी करना चाहती है । किन्तु उसके पापा, जो भारतीय आचार-विचार एवं संस्कृति से जुड़े हैं, उसका विरोध करते हैं । किन्तु राधिका विद्रोह करके तथा पाश्चात्य चकाचौंध के वशीभूत हो विदेश पत्रकार डैन के साथ भाग जाती है । वह पापा का विरोध तो करती है , किन्तु उनके गरिमामय व्यक्तित्व को भूलनहीं पाती । इसप्रकार

उसके मन में निरन्तर संघर्ष की स्थिति बनी रहती है । वह डैन के प्रति निष्ठा वान नहीं हो पाती और न ही डैन उसके प्रति निष्ठावान हो सका । राधिका डैन को पति की दृष्टि से नहीं पिता की से दृष्टि मिलती है । एक जगह वह कहता भी है "..... राधिका तुम मुझमें अपना पिता ढूंढ रही थी, वही पिता जिसे त्रास देने के लिए तुम मेरे साथ चली आयी थी । पर मैंने तुम्हारे पिता की जगह स्थापित होना नहीं चाहा, मैं तो स्वतंत्र व्यक्तित्व हूं ।.... मैं तुममें अपना खोया यौवन ढूंढ रहा था । अपनी पत्नी को छोड़कर चले जाने की कड़वाहट धोना चाहता था, पर शायद हम दोनों ही सफल नहीं हुये।"[15]

इसप्रकार लेखिका ने स्वतंत्रता के पश्चात पूर्ण तीव्र गति से बढ़ती व आधुनिक बोध से भटकती भारतीय आधुनिक नारी की निस्सारता, दुविधाग्रस्त मनस्थिति एवं आत्मा की छटपटाहट का मार्मिक चित्रण किया है ।

इसीतरह राधिका, अक्षय और मनीश में भी पिता को खोजती रहती है । इस तरह लेखिका ने आधुनिक नारी की कुंठा को उभारा है । पग पग पर पुरूषों का चयन करते करते राधिका थक जाती है । और वह जीवन के में स्थायित्व चाहती है । दूसरे शब्दों में कहें तो आज की भारतीय नारी तमाम आधुनिकता का व स्वच्छंद विचारों के बावजूद जीवन में सुरक्षा व स्थायित्व चाहती हैं । इसी भावना के कारण पाश्चात्य नारी भी आज भारतीयों से विवाह करने की ललक रखती हैं । डैन की पत्नी उसे छोड़कर चली जाती है और डैन उसे सहज भाव से "मुक्त" कर देता है । यह राधिका के लिए कटु अनुभव सिद्ध होता है । स्वदेश लौटने पर निराश हो कहती है, "मेरे जीवन में प्लेब्वॉय के लिए स्थान नहीं । मैं संगी चाहती हूं, जिसमें स्थिरता और औदार्य हो, जो मुझे मेरे सारे अवगुणों सहित स्वीकार कर लें । मेरे अतीत को झेल ले ।"

लेखिका यहाँ स्पष्ट करना चाहती है कि भारतीय मध्यम वर्गीय नारी न तो पूरी तरह से आधुनिक बन पायी है और न ही प्राचीन संस्कारों से जुड़ी हुई है । उसकी स्थिति द्विधात्मक बनी हुई है । विदेशी चकाचौंध से

प्रभावित भी है और भारतीय संस्कारों के मोह में भी बंधी हुई है। इसी कि दुविधाग्रस्त मनस्थिति के संघर्ष, का वर्णन लेखिका ने राधिका के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अन्तर्द्वंद्व से पीड़ित राधिका किनारा व सुरक्षा चाहती हुई भी मनीश को चुन लेती है जो पग-पग पर लड़कियों का वरण करता है। उसकी तुलना में अक्षय जो उसे सहयोग व सुरक्षा प्रदान करता है, उसे छोड़ देती है। इसप्रकार वह अपने पापा को दुबारा तिरस्कृत करती है।

निस्संदेह उषा प्रियवंदा ने इस उपन्यास में गहरी समस्या को मार्मिक ढंग से उठाया है। इसमें पापा का चरित्र ही गौरवपूर्ण, भारतीय संस्कारों से युक्त है जबकि राधिका, डैन, अक्षय, व मनीश के चरित्र आधुनिक बोध, स्वच्छंद वृत्ति के कारण जीवन मूल्यों को तोड़ते हैं जिससे उनके जीवन में विचित्र सी अनास्था, भय, संत्रास, भटकाव व आतंक की स्थिति बनी रहती है। स्वतंत्र व्यक्तित्व की दुहाई देता प्रत्येक पात्र आस्था व जिजीविषाहीन है।

9- "अन्तराल" (1967)
- मोहन राकेश

मोहन राकेश कृत "अन्तराल" में नर नारी के शाश्वत काम कुण्ठाओं तथा नये संबंधों का चित्रण बदलते हुए जीवन-मूल्यों के संदर्भ में किया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र कुमार और श्यामा हैं। सीमा तथा उसकी माता आदि पात्र भी आते हैं। श्याम और कुमार का पारिस्परिक आकर्षण है। यह आधुनिकता का उजागर है।

"अन्तराल" उपन्यास में श्यामा और कुमार बीच की पीढ़ी के प्रतीक हैं तो सीमा नयी पीढ़ का प्रतीक है। इसीलिए व्यक्तिगत दायरों में विधवा श्यामा अविवाहित कुमार के साहचर्य में आकर प्रेम करती है किन्तु संस्कारवश उससे शादी नहीं कर पाती है और न नैतिक मूल्यों को ही ग्रहण कर पाती है। अन्त में उसके साथ साथ शारीरिक संबंध स्थापित करने के पश्चात् आत्म-ग्लानि का अनुभव करती है और हमेशा के लिए संबंध तोड़ लेती है। इसके अतिरिक्त सीमा व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्यों को नकारती हुई अन्य अनेक जाति के लड़कों के साथ संबंध रखती है। वह अपनी माता से कहती है कि वह

दकियानूस विचारों में विश्वास नहीं रखती है । वह आधुनिक युवती है । वह धार्मिक तथा नैतिक और सामाजिक मूल्यों को अस्वीकार करती हुई "बाय फ्रेण्ड" के साथ घूमना ,शराब पीना तथा नशीले पदार्थों को प्रयोग करना, उसका शौक बन गया है । माता का पाठ पूजा तथा धर्म कर्म सभी को अस्वीकारती है । आधुनिक संस्कृति तथा सभ्यता के मोह में भारतीय परम्परागत जीवन-मूल्यों को नकारती हुई नारी स्वातंत्र्य की प्रवृत्ति को महत्व देती है । पवित्रता, कौमार्य तथा सांस्कृतिक मूल्यों को महत्त्व नहीं देती है ।

इस उपन्यास में श्यामा तथा कुमार भारतीय संस्कारों से जुड़े होते हैं । इसीलिए लेखक ने व्यक्तिगत, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों का अस्तित्व उन में दिखाया है । फिर भी व्यक्तिगत स्तर पर नारी पुरूष की काम कुण्ठा के आधार पर नए संदर्भों की खोज की है । श्यामा अपने पति के दो वर्ष के साहचर्य से शारीरिक संबंध और आन्तरिक उद्वेलन से पीड़ित रहती है । और उसके नये निर्णय की दिशाएं खुलती हैं,बंद होती हैं । इस स्थिति में वह कुमार की ओर झुकती है और तदन्नंतर पीछे हट जाती है । श्यामा के अन्तर्मन में चलते हुए द्वंद्व का चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर परखा है । युगीन संदर्भ में उनकी मानसिक तनाव, कुण्ठा, अकेलेपन तथा भटकन प्रवृत्ति का चित्रण किया है । इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे परस्पर सहानुभूति ,प्रेम, साहचर्य, आत्मीयता तथा सद्भाव को बनाये रखते हैं । यह कुमार एवं श्यामा के रूप में नर नारी के मानव संबंधों की एक आन्तरिक कहानी है । इसमें प्रेमी के न मिलने से प्रेम और क्षणिक शारीरिक मिलन से विरक्ति है ।

उपन्यास में नारी स्वतंत्रता और उसकी आर्थिक, आत्म निर्भरता के कारण उसका अन्तर्मन नये चिन्तन से सम्पृक्त होता है । श्यामा इन विचारों को उद्घाटित करती है । "किसी भी व्यक्ति के साथ बंधकर उसके शासन में रहना, मुझे बहुत गलत लगता है । और तुम मुझे जानते हो कि हर पुरूष किसी न किसी रूप में स्त्री पर शासन करना चाहता है । मैं सोचती हूं कि मैं एक अपवाद बन सकती हूं ।...... मैं आर्थिक रूप से भी किसी पर निर्भर नहीं

रहना चाहती थी । इसीलिए मैंने आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की, अकेले रहना और खुद कमाना सीखा है ।"[16] अतः यह कहा जा सकता है कि नारी स्वतंत्रता आर्थिक रूप से निर्भर होने के कारण सामाजिक, नैतिक तथा व्यक्तिगत जीवन-मूल्य टूटे । इसके अतिरिक्त कुमार और श्यामा प्राचीन जीवन मूल्यों के संस्कार को पूरी तरह से नहीं तोड़ पाते हैं क्योंकि उनके अन्तर्मन में किसी न किसी कोने में सामाजिक संस्कार विद्यमान हैं । यही कारण है कि परम्परागत मूल्यों के विघटन में पुरानी पीढ़ी की कुढ़न एवं घुटन, मध्य पीढ़ी की सहिष्णुता और नई पीढ़ी की विद्रोह की चेतना, अन्तराल" में है ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में पुरानी पीढ़ी परम्परागत जीवन-मूल्यों से चिपकी हुई है । तो मध्य पीढ़ी के श्यामा और कुमार के जीवन में पुराने मूल्यों के प्रति अन्तराल आ गया है और नई पीढ़ी में प्राचीन जीवन-मूल्यों के प्रति विद्रोह तथा अस्वीकार की प्रवृत्ति पाई जाती है । उसमें कुमार और श्यामा के माध्यम से जीवन के प्रति अर्थहीनता एवं उद्देश्यहीनता का चित्रण है अस्तित्ववादी विचारधारा के अनुसार जीवन का कोई महत्त्व नहीं माना गया है । यही कारण है कि प्राचीन जीवन-मूल्यों से व्यक्ति का विश्वास उठता जा रहा है । यह उपन्यास प्राचीन औरनवीन मूल्यों के टकराहट का है । भौतिकवादी ,फैशनवादी तथा सोसाईटी गर्ल आदि कारणों के विकसित हो जाने पर समाज, धर्म, जाति, आदि नये चिन्तन से जुड़ गया है ।नयी पीढ़ी का युवक वैज्ञानिक सुख साधनों के प्रति आकर्षित होकर आचार विचार तथा नैतिकमूल्यों को नकारने लगा । नयी पीढ़ी का युवक सुख सुविधाओं तथा जिजीविषा में लगा हुआ है । आर्थिक निर्भरता के कारण नये व्यक्ति मन का निमर्ण हुआ । अतः लेखक ने व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों का चित्रण किया है । और प्रेम साहचर्य, वासना, मानव समानता, सह्योग तथा सहिष्णुता के मूल्यों की स्थापना की और इसके आधार पर यह सिद्ध है कि यह कृति साठोत्तरी जीवन चेतना को प्रकारान्तर से प्रकाश में लाती है ।

10- "चिड़ियाघर" (1968)
- गिरिराज किशोर

गिरिराज किशोर का उपन्यास "लोग" के बाद यह दूसरा उपन्यास है । गिरिराज किशोर के "चिड़ियाघर" उपन्यास में, व्यक्ति चेतना से उत्पन्न "स्व" भावना की अति को प्रकट किया गया है । सन् 1960 के बाद तीव्रतर होती कुछ समस्याओं एवं अपेक्षाओं को लेकर इस उपन्यास का निर्माण हुआ है । उपन्यास की कथा "एम्लायमेंट एक्सचेंज" अर्थात् काम दिलाऊ दफ्तर के घेरे में घूमती रहती है । इस दफ्तर में नौकरी दिलाने के नाम पर कितना भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद, छीना-झपटी और बेईमानी व्याप्त है, उस का वास्तविक चित्रण गिरिराज किशोर ने "चिड़ियाघर" में किया है । आज कल के दफ्तरों में, काम करने के बदले, एक-दूसरे की टाँग खींच कर गिराने की प्रथा चल पड़ी है । कर्मचारी अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए वे दूसरे के गर्दन पर क्रुरता से घाव करने में हस्तसिद्ध हो गये हैं । आज मध्यम वर्ग की हाथ में सुख-साधनों की लम्बी सूची तो है किन्तु पैसे के नाम पर केवल इतना मिलता है कि वे केवल शराब की कुछ बोतलें, व ऊपरी टीम-टाम ही कर पाते हैं , फिर पत्नी-बच्चों का पेट भरने के लिए रिश्वत लेते हैं , झूठ बोलते हैं, छल-कपट करते हैं । काम दिलाऊ दफ्तर के अफसर मि० स्मिथ , उनके सहकारी दास, विष्ट , श्रीवास्तव, अग्रवाल, मिसेज़ रिजवी -- सभी एक दूसरे को लताड़ते, पछाड़ते व गला काटते जी रहे हैं । इस प्रकार यह दफ्तर चिड़ियाघर बन गया है । इस दफ्तर के द्वारा केवल यहाँ के कर्मचारियों के रिश्तेदारों को ही काम मिलता है , बाहर खड़ी बेकारों की भीड़ से किसी को नौकरी नहीं मिलती । असन्तुष्ट युवक स्वर तंग आकर चीखने लगता है, "हम लोग नौकरी के लिए आते हैं तो बकवास करते हैं, आप लोग अपने दोस्त अहबावों के कार्ड निकालती हैं और उन्हें नौकरी दिलाती हैं ..... । मैं पिछले एक साल से चक्कर काट रहा हूँ आप मुझे ऐसे ही टाल रही हैं । अगर आपके दफ्तर को सौ पचास रूपये चाहिये तो बता दें, लेकिन इस तरह परेशान न करें ।"[17]

चिड़ियाघर में आधुनिक नारी का व्यांग्यत्म चित्र उपस्थित किया है। अपनी आधुनिकता के कारण वह सारे दफ्तर में नाम कमा चुकी है। अश्लीलता के लिए प्रयोग किये जाने वाले शब्दों का प्रयोग इस माडर्न सिविलाइज्ड लेडी ने किये हैं। उसे मर्दों का अनुभव भी पर्याप्त मात्रा में है। वह पुरानी द्रौपदी वाली प्रथा को पुन: लाकर, आधुनिक व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहती है। वह आनारी की स्थिति से अभी सन्तुष्ट नहीं दिखती। उसके शब्दों में, "क्यों जौहरी, अगर मैं एक एक्सपेरीमेंट करूं? चार शौहर रखूं, जिनमें से एक होम देखे, दूसरा फारेन रिलेशन्स की देख-रेख रखे, तीसरा प्रोटोकल का ख्याल करे और चौथा इण्टरटैन करे।[18] इस प्रकार लेखक ने रिजवी के माध्यम से उत्तेजक सेक्स को उभारा है।

इस उपन्यास में लेखक ने व्यक्तिगत चेतना के अन्तर्गत "अर्थ" व "काम" की उच्छृंखलता की ओर संकेत किया है। आज के परिवेश, जिसमें सर्वत्र सर्वत्र भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी व भाई भतीजावाद फैल रहा है, पर गहरा व्यंग्य किया है। आर्थिक व राजनैतिक प्रवृत्ति के कारण परम्परागत नैतिक मूल्य टूट रहे हैं। नारी भी अर्थोपजन करने को ही अपना मुख्य लक्ष्य मानकर येन-केन प्रकारेण अर्थ कमाना चाहती है। उसी का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

11- "अलग- अलग वैतरणी" §1968§-शिव प्रसाद सिंह

शिव प्रसाद सिंह कृत "अलग अलग वैतरणी" भी राग दरबारी की भांति ही ग्रामीण समस्याओं, जटिलताओं तथा विसंगतियों पर आधारित उपन्यास है। इसमें युगीन भारत के नये उभरते हुए जीवन-मूल्यों को, गांव की नयी प्रवृत्तियों और कार्य कलापों में, सामाजिक संगतियों-विसंगतियों में, स्वच्छंद वैयक्तिक यौन वृत्ति में, पारिवारिक संबंध विघटन में चरित्रहीनता में, भौतिक मूल्यों के मोह में, बदलते हुए धार्मिक, तथा सांस्कृतिक मूल्यों में और राजनीतिक पैंतरेबाजी के संदर्भ में परिवर्तन का यथार्थ रूप दृष्टिगोचर है।[19] यह उपन्यास ग्राम जीवन की विविध समस्याओं, आपदाओं, बिखराव, स्वार्थ लिप्सा, प्रश्नों एवं संभावनाओं, सामूहिक जीवन का ह्रास

के मूल्य आदि का यथार्थ चित्रण का दस्तावेज़ है । ग्राम जीवन के ऐसे ही माहौल में नई पीढ़ी पनप रही है । जहाँ जीवन में भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता बेईमानी तथा शोषण है । चारित्रिक पतन है, वहाँ सामाजिक और नैतिक मूल्यों की बात कैसे की जा सकती है । अतः करैता गाँव पर आधारित उपन्यास में, खेतिहर, मजदूरों तथा जमींदारों का संघर्ष है । इसमें युगीन भारतीय ग्रामीण जीवन-मूल्यों का चित्रण है ।

व्यक्तिगत मूल्यों के दृष्टिकोण से परनिया,भाभी, उसका पति,कल्पु मुंशी, जवाहर लाल ,हेडमास्टर, गोपाल, शिवराम, हरिया,सिरिया और बुझारथ आदि स्वच्छंद यौन वृत्ति की पिपासा के बीच यौन संबंधों को महत्त्व देते हैं ।[20] परनियाँ भाभी पति के नपुंसकता से कुपित होकर, छोटे लड़कों को नंगा देखने मात्र से संतुष्ट होती है । वह कभी शशिकान्त से तो कभी डाक्टर देवनाथ से काम पुर्ती करती है । कल्पू शिक्षित बीबी से संत्रसित है । मास्टर शशिकान्त गाँव की किशोरियों से परिचित है, गोपाल से शिवराज शारीरिक भूख की तृप्ति करता है । पत्नी अभाव में हेडमास्टर लड़कों से वासना पूर्ति करना अशुभ नहीं मानता है ।[21] यह कहा जा सकता है कि "आधा गाँव" के समान "अलग अलग वैतरणी" में भी यौन संबंध देखा जा सकता है । आर्थिक संबंधों के कारण भी समाज में यौन विकृतियाँ फैल रही हैं । इस उपन्यास में राग दरबारी के समान ही मूल्यहीनता दायित्वहीनता तथा भ्रष्टाचार है ।

सामाजिक मूल्यों का विघटन करैता गाँव को परिवर्तित कर देता है । गाँव का पूरा परिवेश विषाक्त वातावरण से भरा हुआ है । गाँव अपनी मर्यादा और गरिमा को त्याग रहा है । गाँव पर शहरीकरण का प्रभाव पड़ रहा है । इससे ग्रामीण जीवन-मूल्यों में तेज़ी से बदलाव आ रहा है । सामाजिक संबंध तीव्र गति से टूट रहे हैं । जैपाल सिंह जमींदार इस परिवर्तन को देखकर गाँव छोड़कर चला जाता है । वे पुनः आते हैं तो उन्हें प्रत्येक व्यक्ति बदला हुआ नज़र आता है । पंचायत का सारा कार्यभार उसके हाथों से चला जाता है । गाँव के खेतिहर तथा मजदूर वर्ग उसके अत्याचारों के प्रति विद्रोह करते हैं ।

बिना रोज़ी या मजदूरी के अब गाँव के श्रमिक कार्य नहीं करते हैं। अब जमींदारों के निर्दयतापूर्ण व्यवहार का मजदूर विरोध करने लगे हैं। सरूप भगत की लड़की जुलरिया के साथ श्री सिंह छेड़छाड़ करता है तो सरूप भगत उसका विरोध करता है। और कहता है कि "हम आपका काम करते हैं, मजूरी लेते हैं। हमें गरज है कि करते हैं। आपको गरज है कि कराते हैं।"[22] आज निम्न वर्ग में भी अपनी इज्जत के प्रति जागरूकता आ गयी है। दलित वर्ग तथा पीड़ित वर्ग के हृदय में आर्थिक साधनों के असमान वितरणों से वर्ग संघर्ष के बीज उग रहे हैं।

यह उपन्यास रागदरबारी के समान ही राजनीतिक चेतना से परिपूर्ण है। "राग दरबारी" में वे ग्राम पंचायत का अधिकार अपने हाथों में रखते तो इसमें जमींदार जयपाल सिंह भी निजी स्वार्थों को पूरा करते हैं। इसमें चुनाव प्रक्रिया, पार्टीबाजी, दलबाजी, आदि राजनीतिक गतिविधियों देखने को मिलते हैं। जयपाल सिंह की पार्टी चुनाव क्षेत्र हार जाती है तो सुखदेव को ग्राम पंचायत का मुखिया बना देते हैं। सुखदेव तथा "रागदरबारी" के शनीचर में कोई अन्तर नहीं है। राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में अन्याय, भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता परिव्याप्त है। ईमानदारी, सच्चाई तथा भलाई विपिन और शशिकान्त में है। जमींदार, जयपाल सिंह का काम लाने की दलाली, काला धन्धा, चोर बाजारी और डकैती है। गाँव कीगरीब जनता का शोषण किये बिना उसका काम नहीं चलता है। उसकी राजनीतिक शक्ति है कि "इसी टोपी का असर है कि थाना पुलिस, नेता, अफसर सभी को समझा बुझाकर काम करा लेता हूँ।"[23] गाँव में राजनीतिक चेतना के कारण नयी चेतना आई। जयपाल सिंह की जमींदारी के साथ पंचायत राज्य भी चला जाता है। फलस्वरूप वह आत्मपीड़न, निराशा, कुंठा तथा मानसिक तनाव से भर जाता है। गाँव में पंचायती राज्य के आवरण में एक नये वर्ग, नयी जातीयता तथा नये रिश्ते उभरे हैं। चुनाव के समय पैंतरेबाजी, गुटबंदी, जन सेवकों के रूप में नयी युवक मण्डली गुण्डों की पैदा हो गयी है। जमींदार वर्ग जनता जनार्दन के नाम पर गुण्डागर्दी के नारे लगाकर अपने

स्वार्थों को पुरा करते हैं । गाँव के श्रमिक वर्ग में नयी भावक्रान्ति आ रही है । राजनीतिक चेतना ने नये जीवन-मूल्यों की सृष्टि की । गाँव में धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन मूल्य टूट रहे हैं और रूढ़िता और धर्माडम्बर नष्ट हो रहे हैं ।

अतः यह कहा जा सकता है कि जहाँ गाँवों में ईमानदार सज्जन, परिहित तथा लोक हित की भावना रखते, आज वहाँ के लोग, आत्मकेन्द्रित हो गये हैं । ईमानदारी के स्थान पर बेईमानी को स्वीकार कर रहे हैं । सौ यता, भाई चारे, मैत्री, आदि मूल्य टूट रहे हैं । गाँव का सीधा सादा व्यक्ति नहीं रह गया है । आज उनके आचार विचार बदल रहे हैं ।उनके आदर्श व्यवहार, संकल्प, संवेदना ,कार्य कलाप सभी बदल रहे हैं । ज्वाहरलाल व बुझारथ जैसा पर नारी के साथ बलात्कार करने वाले व्यक्ति गाँवों में विद्यमान हैं । तब हम गाँव कीपवित्रता कायम नहीं रह सकती है । उपन्यास में विपिन के रूप में सच्चाई, भालई तथा लोकहित की भावना तथा दायित्व बोध को समझने वाले भी हैं । किन्तु ऐसे व्यक्ति गन्दे माहौल में कहाँ रह सकते हैं ? इसमें साठोत्तर जीवन-मूल्यों का सम्यक् चित्रण हुआ है ।

12- "राग-दरबारी" (1968)

-"श्री लाल शुक्ल"

"राग दरबारी" श्री लाल शुक्ल कृत एक व्यंग्यात्मक उपन्यास है ,जिसमें व्यंग्यों के माध्यम से आधुनिक ग्रामीण जीवन में प्रवेश कर रहे भ्रष्टाचार, राजनीति, व नई चेतना का ईमानदारी से वर्णन है । राग-दरबारी का गाँव शिवपालगंज शहर के समीप ही पड़ता है, इसलिए शहरों की गतिविधियाँ वहाँ भी पहुँचने लगी हैं, और इसका सबसे अच्छा प्रदर्शन करता है गाँव का एकमात्र छंगामल इण्टर कालेज । इस कालेज में विद्यार्थी पढ़ाई कम और राजनीति ज्यादा सीखते हैं । इस उपन्यास का गाँव प्रेमचन्द कालीन गाँव न होकर साठोत्तर गाँव है, जहाँ सहकारी समिति की दुकान खुल चुकी है । कालेज, थाना आदि भी खुल चुके हैं । इसलिए गाँव के निवासी अब भोले-भाले नहीं रह गये हैं इनमें

भी नव-चेतना परिलक्षित होती है । इसके उदाहरण - वैद्य जी, बड़ा पहलवान {बद्री},रूप्पन, शनीचर, लंगड़ आदि पात्र हैं ।

उपन्यास की कथा मुख्य रूप से इन्टर कालेज में घटित होती है । भ्रष्टाचार का ऐसा कोई रूप शेष नहीं बचा जो छंगामल कालेज में दिखाई न देता हो। जातिवाद, भाई भतीजावाद ,रिश्वतखोरी, सरकारी पैसे का दुरपयोग, तानाशाही तथा विपक्षी दल के अध्यापकों के साथ अन्याय आदि । आज का शिक्षित बुद्धिजीवी वर्ग भी इन परिस्थितियों के समक्ष झुकता जा रहा है तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मौन धारण किये हुए है । प्रिंसीपल, कालेज के अन्य प्रध्यापकगण ,तथा रंगनाथ उनमें से हैं । इस प्रकार उपन्यासकार ने राजीनति, भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ भावना के कारण टूटती नैतिक मान्यताओं व सामाजिक मूल्यों का चित्रण बड़ी तटस्था के साथ किया है ।

रूप्पन, राग-दरबारी का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जो भ्रष्ट, पतित, अनैतिक है तथा दशाहीन, नयी पीढ़ी का प्रतीक है । वह कालेज के प्रिंसीपल को भी अपनी अंगुली पर नचाता है ,तथा बेला नामक युवती के साथ रंग-रेलियां भी मनाता है । आज देश में ऐसे सैंकड़ों रूप्पन हैं, जो पूरे देश को गंदला ~~किये दे~~ कर रहे हैं । रूप्पन गले में रूमाल बांध, मुंह में पान दबाये आधुनिक विद्यार्थी है । वह एक कक्षा में दो-तीन बार फेल होता है और अपनी सफाई में कहता है - "तुम कहोगे कि उसमें तो मैं दो साल पहले भी था, पर मुझे तो शिवपालगंज में इस क्लास से बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं सूझ पड़ता । तुम जानते नहीं हो दादा इस देश की शिक्षा पद्धति बिलकुल बेकार है । बड़े बड़े नेता यही कहते हैं मैं उनसे सहमत हूं । फिर तुम इस कालेज का हाल भी नहीं जानते।मास्टर लिखना पढ़ाना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स भिड़ाते हैं । कुछ बेशर्म लड़के भी हैं, जो कभी कभी इम्तहान पास कर लेते हैं ।"[24]

आज गांव-गांव में राजनीति प्रवेश कर चुकी है । राजनीति ने नवचेतना

तो उत्पन्न की तथा ही भ्रष्ट राजनीति ने जीवन-मूल्यों को भी प्रभावित किया है । शिवपाल गंज का इन्टरमीडियट कालेज इसका अखाड़ा बन गया है । बैद्यजी राजनीति कुशल नेता है । चुनाव किस प्रकार जीता जाता है वह अच्छी तरह जानता है । सनीचर, जो अनपढ़ ही नहीं अपितु गवांर तथा मूर्ख भी है, गांव का मुखिया बना दिया जाता है और रूप्पन अपने पिता की तरह राजनीति में बड़ा नाम कमाता है । उसका कहना है कि राजनीति में क्या क्या नहीं होता-- "···· देखो दादा, यह तो पोलोटिक्स है । इसमें बड़ा बड़ा कमीनापन चलता है । यह तो कुछ भी नहीं हुआ । पिता जी जिस रास्ते में हैं उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है । दुश्मन को जैसे भी हो, चित्त करना चाहिये । यह न चित्त कर पायेंगे तो खुद चित्त हो जायेंगे····"[25] और इसी सिद्धान्त को आज भारत के नेतागण अपना/अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगा है । वह अपने स्वार्थ के लिए आन्दोलन करवाता है , हड़ताल करवाता है । यहाँ तक कि गांव या नगर को भी तबाह करवा देता है । इसप्रकार भ्रष्ट राज नीति के कारण के कारण सामाजिक, प्रेम, सदेभाव, परोपकार आदि मूल्य तो टूट रहे हैं । साथ ही स्वार्थ भावना तीव्रतर होती जा रही है , तथा सर्वत्र भ्रष्टाचार मुंह फैलाये खड़ा है । उसी का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है ।

उपन्यास में स्वच्छंद यौन चेतना तथा काम कुण्ठा का चित्रण बेला के माध्यम से किया है । बेला कुंवारी है तथा युवती है । उसने सिनेमा तथा फिल्मी गानों के माध्यम से सारी गृहस्थी का चित्र देख लिया है । इसी कारण वह अपने कुंवारेपन को वहन नहीं कर पाती और रूप्पन से इश्क करने लगती है । एक रात वह रूप्पन कीखाट के पास आकर अपने गर्मागर्म होंठ रूप्पन के ओठों पर रखती है किन्तु दुर्भाग्य से वह रंगनाथ निकल आता है और वह "हाय मेरी मय्या" कहकर छलांछल भाग जाती है । लेखक ने यहाँ वर्तमान की सेक्स समस्या तथा काम पीड़ित युवा पीढ़ी द्वारा टूटती नैतिक मान्यताओं, तथा सामाजिक मूल्यों का उदघाटन किया है ।

आज भारत में जाति-भेद जहाँ समाप्त होता दिखाई पड़ रहा है वहीं वर्ग भेद भावनातीव्र रूप से दृष्टिगोचर हो रही है । आज सर्वत्र एक वर्ग, दूसरे वर्ग को पीसता नज़र आ रहा है । उच्च वर्ग, अपने से निम्न वर्ग को चोर ठहराता है तथा स्वयं समझदारी से बच जाता है । जोगनाथ जो लोफर , लाठीबाज़, चोर और गबन करने वाला है, को पुलिस पकड़ कर ले जाती है तो वैद्य जी उसे जमानत पर छुटवाते हैं । और जब इन्सपैक्टर मना करता है तो उसका तबादला भी करवा देते हैं । इस तरह चारों तरफ घूस, षड्यंत्र, पुलिस की अकर्मण्यता आदि का बोलबाला है ।

इस प्रकार कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उपन्यास रागदरबारी सभी तबके का पर्दाफाश करता हुआ यह अनोखा उपन्यास है । आज की भ्रष्ट-शिक्षा पद्धति ,राजनीति, शासन प्रणाली तथा देश व्यवस्था का चित्रण पैने व्यंग्यों के माध्यम से किया है । इस भ्रष्टाचार के कारण ही हमारे परम्परागत जीवन मूल्य - प्रेम, सद्भाव, परोपकार आदि मूल्य धूमिल धूमिल होते जा रहे हैं । रूप्पन तथा बेला के द्वारा , जो युवावर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमारे सामाजिक मूल्य नकारे जा रहे हैं । पहलवान द्वारा पिता को पीटा जाना इस बात का समर्थन करता है कि आज की युवा पीढ़ी न केवल उच्छृंखल है अपितु कर्तव्यच्युत भी है । वह, आज्ञा-पालन, दायित्व बोध आदि को त्याग रही है । इस प्रकार राग-दरबारी उपन्यास में श्री लाल शुक्ल ने वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में टूटते जीवन-मूल्यों का यथार्थ रूपेण चित्रण किया है ।

13- "जल टूटता हुआ" (1969)

- "राम दशरथ मिश्र"

"जल टूटता हुआ" उपन्यास में लेखक "राम दशरथ मिश्र" ने तिवारीपुर गांव के बदलते परिवेश के साथ वहाँ के निवासियों की संवेदनाओं, इच्छाओं आपसी संबंधों व पारिवारिक परिस्थितियों का गहराई से चित्रण किया है । औद्योगीकरण , व राजनीति के कारण साठोत्तर भारत के गांवों में किस सीमा

तक परिवर्तन आया है उसका यथार्थ व नग्न चित्रण इस उपन्यास में मिलता है । "जल टूटता हुआ" में वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर द्वंद्व की स्थिति को उभारा गया है । व्यक्तिगत स्तर में महिपसिंह और गनपतिया, महिपाल और सतीश, सतीश और राजकुमार तथा कुंजू व विरजू की टकराहट है जो बाद में हिन्दू-मुस्लिम ,जमींदार-मजदूर, जमींदार व किसान की टकराहट में बदल कर सामाजिक स्तर का रूप धारण कर लेती है । इस उपन्यास के पात्र एक तो अपने व्यक्तिगत दुखों से दुखी है ,दूसरी ओर स्वार्थसिद्धि के लिये किये गये सामाजिक संघर्ष और अधिक दुखी बना देते हैं । इस प्रकार "अलग अलग वैतरणी" उपन्यास की तरह इस उपन्यास में भी वर्ग-संघर्ष दृष्टिगोचर होता है । इसी वर्ग संघर्ष के कारण उपन्यास में सर्वत्र मूल्यहीनता के साथ-साथ परम्परागत जीवन मूल्य टूटते नजर आ रहे हैं ।

सतीश, सात्त्विक गुणों से युक्त, मुख्य पात्र है , जबकि महिप सिंह झूठे दम्भ और नकली ज़मींदारी के मुखौटे के सहारे निम्न वर्ग पर अत्याचार करता है । जगपतिया जो मजदूर नेता है , जमींदारी प्रथा के प्रति विद्रोह करता है । कुंजू और बदमी की वैयक्तिक स्वच्छंद यौन भावना गांव की नैतिक परम्पराओं को तोड़ती है । नीची जाति का उच्च वर्ग के साथ यौन सम्बंध स्थापित करना बदलते हुये दृष्टिकोण का परिचायक है ।

समाजगत नये दृष्टिकोण "जल टूटता हुआ" में तीव्रगति से परिलक्षित हो रहे हैं । शोषण एवं आर्थिक विषमता के कारण, अर्न्तजातीय विवाह के कारण तथा नई वर्ग चेतना के कारण नैतिक मूल्य हीन हो रहे हैं । साथ ही संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और एकाकी परिवारों के संबंधों में भी कड़ुवाहट घुलती जा रही है । ग्रामीण परिवेश को शहरी संस्कृति व चकाचौंध वाली सभ्यता भी प्रभावित कर रही है ,इसी कारण गांव की पवित्रता व भोलापन फीका पड़ता जा रहा है । और राजनीति तो गांव की गली-गली में प्रवेश कर रही है ,जिसका प्रभाव भी ग्रामीण जनों पर पड़ने लगा है ।

पहले हम विवेचन कर चुके हैं कि आधुनिक सभ्यता औद्योगिककरण तथा

शहरों का प्रभाव भी ग्रामों पर विशेष रूप से पड़ा जिससे ग्रामीण भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सके । इस उपन्यास में भी स्वच्छंद कामुकता के दर्शन होते हैं । दीन दयाल महाबल की पत्नी के साथ ,कुंजू-बदमी के साथ और वंशी पंडित कीपत्नी पारबती ,चमार हलवाहे हँसिया के साथ गाँव छोड़कर भाग रही थी लेकिन राम बहादुर के पूछने पर त्रिया चरित्र का नाटक रचती है । इस प्रकार बेमेल संबंध व स्वच्छंद यौन चेतना से पारिवारिक व नैतिक जीवन मूल्य अस्तित्व हीन हो रहे हैं । किन्तु समाज में अन्तर्जातीय विवाह, स्वच्छंद यौनवृत्ति, औद्योगिक व राजनीति आदि के कारण ही छुआछूत का भेदभाव मिटरहा है । तथा निम्न वर्ग के लोगों में नयी चेतना परिलक्षित होता है । "क्या हुआ अगर मेरे भाई ने एक बामन की लड़की से भला-बुरा किया ? चमार का खून-खून नहीं है ? बामन का खून ही खून है । हमारी कोई इज्जत नहीं होती क्या ? बामनों की ही इज्जत होती है ? क्यों नेता जी (जग्गू हरिजन) आप चुप क्यों हो ? जब चमरोटी की तमाम लड़कियों पर ये बाबा लोग हाथ साफ करते हैं तो कोई परलय नहीं आती और चमार की लड़की को छू ले तो परलय आ जाती है ......"26

इस उपन्यास में चित्रित गाँव आधुनिक गाँव है । इसके धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों में नया मोड़ विद्यमान है । परम्परागत भाइचारे, सौहार्द,प्रेम व परोपकार जैसे मूल्य नष्ट हो रहे हैं । राजनीति ने गाँव को भ्रष्ट कर दिया है । धर्म के ठेकेदार अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये धर्म की रक्षा के नाम पर लाठी चलवाते हैं, खून-खराबा करवाते हैं, निर्दोष लोगों को मरवाते हैं और स्वयं बचे रहते हैं । इसी कारण आज लोगो में ईश्वर संबंधी, व धार्मिक भावनायें लुप्त हो रही है ।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि "जल टूटता हुआ" में राम दरश मिश्र ने बदलते परिवेश के साथ परम्परागत जीवन-मूल्यों की टूटन को चित्रित किया है । ग्रामीण जन भ्रष्टाचार व मूल्यहीनता का विरोध तो नहीं कर पाते हैं किन्तु उनके प्रति मूक असन्तोष व्यक्त कर देते हैं । फिर भी इस परिवेश

में आकर व्यक्ति टूट रहा है और साथ ही उसके पारिवारिक संबंध, सद्भाव, भाई-चारे के संबंध, ईश्वर संबंधी धारणाएं, मान-मर्यादायें, तथा परम्परागत आचार-विचार टूट रहे हैं जिनका चित्रण लेखक ने बड़ी ईमानदारी के साथ "जल टूटता हुआ" में किया है ।

14- "आपका बंटी" §1970§
- मन्नू भण्डारी

मन्नू भण्डारी कृत "आपका बंटी" उपन्यास में नारी पुरूष के जीवन की विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का चित्रण है । आधुनिक युग में टूटते हुए पारिवारिक संबंध और उनके स्थान पर नये बनते हुए संबंधों के बीच बालक बंटी के मानसिक तनावों तथा कुंठाओं का सहज चित्रण किया है । लेखक ने आज के युग में बढ़ते हुए "तालक" से उत्पन्न विकट समस्याओं को उदघाटित किया है । यह समस्या नारी उच्च शिक्षा तथा नारी स्वतंत्रता की भावना से उद्भूत होती है । इससे पारिवारिक जीवन-मूल्य, सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के दबाव के कारण टूट रहे हैं ।

इस उपन्यास में बंटी, शकुन, अजय, डाक्टर जोशी तथा उनके के बीच पनपते हुए तनाव के माहौल में अपने को अपेक्षित समझता है । दाम्पत्य जीवन के झूठे स्वाभिमान के कारण परिवार टूटता है । शकुन और अय दोनों परस्पर समझौता और सामंजस्य नहीं कर पाते हैं । इस तनावपूर्ण परिवेश में बंटी का व्यक्तित्व दबा सा रहता है । इस उपन्यास का पूर्ण लक्ष्य है कि पति पत्नी परस्पर समझौता न करने के कारण उनका परिवार छिन्न भिन्न हो गया । नारी स्वातंत्र्य भावना से पति पत्नी का संबंध, पुत्र, माता,पिता का संबंध तथा मातृत्व तथा वात्सल्य के मूल्य टूटते हैं । शकुन प्रिंसीपल होने के कारण अजय से तलाक लेकर स्वतंत्र जीवन बिताना चाहती है । इसमें बंटी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है ।

शकुन डा० जोशी से दूसरी शादी करती है तो बंटी अपनी ममी शकुन तथा डा० जोशी की निकटता असाह्य होती है । उन दोनों के समझाने पर,

वह उनसे पृथक रहता है । उस समय मानसिक तनाव व कुंठाओं से भर जाता है । बंटी डा0 जोशी के बच्चों के साथ भी मिल नहीं पाता है । वह जोशी को पिता भी नहीं कह पाता है । वह अपने पिता के साथ कलकत्ता चला जाता है, किन्तु वहाँ मीरा से माँ नहीं कह पाता है । एक अजनबी, अनजान तथा अकेलापन वह महसूस करता है । तत्पश्चात् होस्टल में रखने पर एकदम सबसे कट जाता है । लेखिका ने नर-नारी के तनावपूर्ण विघटित सम्बन्धों के बीच एक बालक के मानसिक जीवन का चित्रण किया है । यह उसकी सबसे बड़ी विडम्बना है ।

अतः यह उपन्यास आधुनिकता का बोध कराता है और व्यक्ति चेतना तथा नारी स्वातंत्र्य भावना ने पारिवारिक जीवन मूल्यों को तोड़ा । साथ ही मातृत्व, प्रेम, वात्सल्य, सहयोग, सहानुभूति आदि मूल्यों को नकारा गया है । इसमें उच्च मध्यम वर्गीय दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न खोखलेपन और बनावटी पन का चित्रण किया है । इनके जीवन नैतिक मूल्यों का अभाव है । जीवन की नवीन परिस्थितियों के साथ सामंजस्य न कर पाने के कारण परम्परागत जीवन मूल्यों में परिवर्तन परिलक्षित है ।

15- "उसका घर" (1970)

मेहरून्निसा परवेज़ कृत "उसका घर" उपन्यास में एलमा के घर से बेघर उसके टूटन, एवं उसके तलाक के बाद की समस्या है । एलमा मध्यम वर्गीय नारी की विवशताओं तथा सहनशील को लेखक ने आधुनिक जीवन के संदर्भ में उभारा है । उसके जीवन में अभाव, दर्द एवं पीड़ा, घुटन एवं संत्रास का चित्रण है । उपन्यास में मध्यम वर्ग की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा, जीवन की भयंकर विडम्बना, आर्थिक खोखलापन, अनैतिकता, विवाह, परिवार, प्रेम की निस्सारता अर्थात् नारी जीवन की संगति-विसंगति का चित्रण है ।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण लेकर चलने वाले पात्र , एलमा, रेशमा देव तथा एलमा के बड़े भाई है । एलमा का जीवन तलाक की समस्याओं से घिर जाता

है । उपन्यास में एलमा परिवार प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए अपने भाई के कहने पर उसके "बास" की अंकशायिनी भी बन जाती है । वह सीधी एवं सहज प्रकृति की नारी है । इसी कारण उसका भाई उसे अपने बॉस के पास भेजता है । उसके हित तथा पारिवारिक जीवन को आर्थिक कठिनाई से बचाने के लिए वह अनैतिक और अवैध कार्य भी करती है । रेशमा एक "बोल्ड" लड़की है वह आधुनिक विचारों की लड़की है । वह ईसाई है । बिना मां की आज्ञा के देव हिन्दू नामक पुरूष से प्यार करती है । उसकी माँ पुराने विचारो वाली तथा ईसू में घोर विश्वास रखने वाली, उसे देव के साथ शादी नहीं करने देती है । किन्तु रेशमा युवा वर्ग का प्रतीक है । रेशमा एक लड़की को जन्म भी देती है फिर भी उसकी रेशमा का कुंआरी समझती है । एलमा बोल्ड नहीं है । वह परिवार त्याग कर मद्रास चली जाती है ।

"उसका घर" में सामाजिक स्तर पर एलमा रेशमा तथा उसके भाई के विचारों- आचारों तथा व्यवहारों व आदर्शों को लेकर उनके जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । तलाक के पश्चात् एलमा को मायके पारिवारिक परिवेश रखकर उसके जीवन की समस्या तथा यातनाओं का चित्रण किया है । एलमा का भाई इतना विवेकहीन है या आधुनिक है कि वह अपनी बहन को पर पुरूष के पास अपनी स्वाथ सिद्धि के लिए भेजता है । यह भाई बहन के शाश्वत् संबंध, जो स्वार्थमय, अजनबीपन तथा स्नेहहीन हो रहे हैं, लेखिका ने टूटते हुए संबंधों को उठाया है । रेशमा आधुनिक लड़की है जो हिन्दू जाति के देव से बिना किसी की परवाह किये शादी करती है । वह सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को सारहीन समझती है । वह नारी चेतना का प्रतीक भी है । वह देव के साथ शादी के लिए संघर्ष करती है । उसका अविवाहित मातृत्व मिलता है ।

इस उपन्यास में नारी की व्यथा को खोजा है । लेखिका ने व्यक्तिगत स्वार्थ को उपन्यास में चित्रण किया है कि एलमा के प्रति उसके भाई का व्यवहार, स्वार्थ सिद्धि हित में बॉस के लिए बलि बन जाना, सरल तथा सीधी, समर्पणमयी तथा इकहरे व्यक्तित्व की नारी एलमा के जीवन का कटु अनुभव, विद्रोह

में नहीं फुटता है । आहूजा की अंकशायिनी चुपचाप बन जाती है किन्तु उपन्यास में बौद्धिक धरातल कम नारी यातना तथा उद्विग्नता अधिक है । युग परिवेश के साथ हमारे रिस्ते बदल रहे हैं । भाई बहिन का रिश्ता, परिवार का संबंध स्वार्थों तक सीमित है । प्रष्ठिा, मर्यादा, आदर्श तथा नैतिकता के जीवन मूल्य नकारे जा रहे हैं । तलाक समस्या को बौद्धिक स्तर पर समकालीनता से संबंधित किया है ।

16- "पत्थरों का शहर" §1971§

- सुरेश सिन्हा

टूटते हुये जीवन-मूल्यों के संदर्भ में "पत्थरों का शहर" एक महत्वपूर्ण उपन्यास सिद्ध हुआ है । जिसमें लेखक "सुरेश सिन्हा" ने दिल्ली में रहने वाले उच्च मध्यमवर्गीय परिवार के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन का चित्रण किया है । इसमें दिल्ली के "वतन-विला" में रहने वाले सुसम्पन्न, सुशिक्षित एवं संयुक्त परिवार के बदलते हुये जीवन मुल्यों का अंकन है । इस उपन्यास में आज के आधुनिक युवा वर्ग की मुल्यहीनता, दिशा-हीनता, स्वच्छंदता, शिक्षित नारी चेतना के साथ-साथ युगीन राजनीतिक तथा आर्थिक भ्रष्टाचार का भी पर्दाफाश किया है । भारतीय जीवन-मुल्य सन् 1960 तक आते आते तीव्रता से बदल रहे हैं ।

उपन्यास के पात्रों में से , नवल किशोर परम्परागत मूल्यों, अनुशासन प्रियता, आज्ञा पालन ,संयुक्त परिवार, आदि मूल्यों को स्वीकारते हैं, तो कहीं कुछ पात्र आधुनिक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुये मूल्यों को खोखला व सारहीन कहकर नकारते हैं - इन पात्रों में, इति, सुषमा, तृप्ता, विवेक, आदि मुख्य हैं । लेखक ने बखूबी नयी पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के अर्न्तद्वंद्व को उभारा है । नवल बाबू परिवार की मर्यादा और नैतिक मूल्यों के प्रति चिन्तित हैं किन्तु उनकी पुत्री इति कहती है "बाबू जी बूढ़े हो गये हैं, बस अपने विचारों को हर मामले में लाद देते हैं ।"[27] हम थोड़ी बहुत स्वतंत्रता चाहते हैं । बाबू जी सठिया गये हैं "[28] युवा वर्ग स्वतंत्रता तथा

नये मूल्यों की छटपटाहट में है । वह पुरानी पीढ़ी की दखल अन्दाजी पसन्द नहीं करता है । सन्तान व माता-पिता, भाई व बहिन, के पवित्र संबंध तथा पति-पत्नी के मधुर शाश्वत् संबंध शिक्षा के दबाव के कारण बदल रहे हैं । महानगरीय जीवन औद्योगिक विकास के साथ साथ बदल रहा है । मानव आज स्वंय यंत्रवत् हो गया है । आधुनिक युग बोध में शिक्षित संयुक्त परिवार झूठे आदर्श व दम्भ के कारण टूट रहा है । मूल्यों के संक्रमण काम में युवा पीढ़ी का न कोई सिद्धांत है , न कोई आदर्श है, और न कोई स्पष्ट मंजिल ही है । वह स्वंय नहीं जानती कि स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ क्या है , और वह किस काम आयेगी । लेखक ने स्पष्ट किया है कि युवा पीढ़ी बिना लंगर के जहाज की तरह है । इति, रवि, तृप्ति, और विवेक, दिशाहीन हो रहे हैं,लक्ष्यहीन भटक रहे हैं ।"[29]

बदलते हुये वैयक्तिक दृष्टिकोण तथा उन्मुक्त सेक्स से पीड़ित सुषमा और विवेक का इसमें चित्रण है । सुषमा आधुनिक नारी है, वह पति को तलाक देकर स्वतंत्र जीवन का आनंद लेना चाहती है । सामाजिक तथा पारिवारिक मान्यताएं तथा नैतिकता को महत्त्व नहीं देती है । मनोज की पत्नी तृप्ता, संसार की प्रमुख आर्टिस्ट बनने के लिए कल्चर सेकट्रुरी की बाहों में झूलती है, शराब पीती है और अश्लील व्यवहार करती है । अपने पति मनोज के द्वारा मना किये जाने पर "तलाक" ले लेती है । इति, घर की मान-मर्यादा तोड़कर विदेशी जाक के साथ शादी करके विदेश चली जाती है । यह व्यवहार शिक्षित परिवार की इन्सानियत, संस्कृति, कुल मर्यादा, तथा सभ्यता पर करारी चोट है ।"[30]

समकालीन युग में सामाजिक मूल्यों का पतन-सुषमा, विवेक, इति तथा तृप्ता आदि युवा वर्ग के खोखले तथा अर्थहीन नये विचारों के कारण हो रहे हैं । उनके स्वतंत्रत व्यवहार तथा यौन-चेतना ने नैतिक मूल्यों को झकझोर दिया है । तृप्ता जैसे आधुनिक पत्नी के कारण परम्परात व शाश्वत् दाम्पत्य जीवन के मूल्य खटाई में पड़ रहे हैं । इसी कारण "तालक" आज के जीवन में "मूल्य" बनता जा रहा है । तृप्ती की महत्त्वाकांक्षाएं पति-पत्नी के बीच

मन-मुटाव पैदा करती हैं । इति भी जाँक के साथ विदेश भाग जाती है, किन्तु एडजस्ट न होने के कारण स्वदेश वापस आ जाती है । यहाँ लेखक ने युवा वर्ग की खोखली आधुनिकता व आधुनिकता के नाम पर पैदा हुई भटकन का मार्मिक चित्रण किया है । उपन्यास में व्यक्ति चेतना के कारण टूटते परिवार व समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है पाश्चात्य शिक्षा के अंधानुकरण के कारण पनपते नये विचारों तथा स्वतंत्रता के कारण युवा पीढ़ी गुमराह हो रही है । यही कारण है कि भारतीय समाज के सामाजिक, पारिवारिक ,दाम्पत्य आदि के मूलाधार जीवन-मूल्य भी धूमिल हो रहे हैं ।

"पत्थरों के शहर" उपन्यास में स्पष्ट किया गया है कि राजनैतिक गतिविधियों के कारण भी नये मूल्यों का विकास हुआ है । कांग्रेसी नेता राम भजन सिंह ठाकुर, चुनाव जीतने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे तथा षडयंत्रों का उपयोग करता है, तथा साम्प्रदायिक दंगा आदि कराता है । जनसंघी नेता नितिन झूठे "राष्ट्रवादी नारे तथा एकता की झूठी दुहाई देता है , और कुर्सी से चिपका रहना चाहता है ।"[31] कामरेड कम्युनिस्ट पार्टी का नेता कृपा शंकर मुसलमान वर्ग में जाकर नमाज़ पढ़ता है । और गरीब जुलाहे तथा गरीब मजदूरों के बीच बैठकर बीड़ी पीता है । इसप्रकार भारत देश आज राजनीति का क्रीडा-स्थल बना हुआ है ।

इस प्रकार लेखक ने अपने उपन्यास में अनास्था, अजनबीपन, मूल्यहीनता नैतिक पतन व आर्थिक तथा राजनैतिक भ्रष्टाचार का मार्मिक चित्रण किया है । सुरेश सिन्हा नई व पुरानी पीढ़ी के द्वन्द्व में पुरानी पीढ़ी की विजय घोषित करते हैं । नई पीढ़ी की यदि हार होती है तो उसके भटकाव के कारण । अतः हम कह सकते हैं कि सुरेश सिन्हा ने "पत्थरों के शहर" उपन्यास में आज के युवा वर्ग का सही चित्रण करते हुए अपने परम्परागत मूल्यों को महत्व दिया है ।

17- "सफेद- मेमने"-§1971§ मणि मधुकर

मणि मधुकर कृत "सफेद मेमने" उपन्यास एक नयी विधा तथा नया परिवेश लेकर चला है । इसका परिवेश महानगर न होकर रेगिस्तान है । उपन्यास में रेगिस्तान के एकाकी व घुटन भरे वातावरण का वर्णन किया है । इसमें महानगर का अकेलापन, अजनबीपन तथा घुटन भरा परिवेश नहीं है । अपितु रेगिस्तान का निरस और एकान्त को चित्रित किया है ।

"सफेद मेमने" में रामौतार, पोस्टमास्टर, जानवरों का डाक्टर बन्ना जस्सू व सन्दो इत्यादि पात्र आते हैं । उपन्यास के समस्त पात्र काम पीड़ित हैं । रेगिस्तान के एकान्त में संभोग और बलात्कार के दृश्य भी हैं । संभोग कभी खुले रेतीले टीले पर और कभी बंद झोंपड़ी में होता है । उपन्यास के कुछ पात्र शहरीपन लिये हुए हैं । इसमें नेगियां गांव के घुटन से भरे हुए जीवन का चित्रण किया है ।

उपन्यास में बदलते हुए व्यक्तिगत दृष्टिकोण आर्थिक एवं सेक्स के आधार पर चित्रित किये गये हैं । बन्ना की दृष्टि में आधुनिकता झलकती है । वह अपने नपुसंक पति रामौतार को छोड़कर असंस्कृत पट्टा राजपूत सन्दो का गर्भ धारण करती है । रामौतार पौरूषहीन होने पर उसकी पत्नी उससे प्यार भी करती है । और उसकी मृत्यु भी चाहती है । व्यक्तिगत जीवन में विकसित स्वच्छंद यौन भावना का चित्रण बन्ना के रूप में उभारा है । सेक्स भावना ने उसे अंधा बना दिया है । उसके जीवन में कोई उद्देश्य नहीं, मूल्य नहीं हैं । सेक्स पूर्ति के लिए वह उसके साथ पूरा जीवन व्यतीत करने का निश्चय भी कर लेती है । वह अपने पति के मान सम्मान तथा परिवार प्रतिष्ठा का ध्यान में नहीं रखती है । इससे बन्ना के व्यक्तित्व में आधुनिकता का बोध उभरता है । किन्तु इस विपरीत रामौतार दयनीय पात्र है । उसका विश्वास है कि बन्ना एक शील औरत है । उसकी निष्क्रियता में खलल नहीं डालेगा ।[32] बन्ना को अफीम खाने की लत पड़ गयी है कि बोरियत से अस्थायी छुटकारा पा सके अंत में डाकखाने के टूट जाने के साथ ही बन्ना और रामौतार का भी संबंध टूट जाता

है । जानवरों का डाक्टर भैंस के साथ संभोग करता है । वह रेगिस्तान की ताप को कम कर रहा है ।[33]

"सफेद मेमने" में बदलती हुई सामाजिक मान्यताओं के प्रति बन्ना का विद्रोह दिखाया है । नेगिया गाँव का वातावरण एकाकीपन लिये हुए है । नगर से गाँव को जोड़ने वाला डाकिया है । वहाँ जीवन नीरस है । सुरजा भी एक मेमने के समान है । दाम्पत्य जीवन टूटता हुआ, सामाजिक तथा नैतिक मूल्य टूटते हुए व्यक्ति की सामाजिक या पारिवारिक कोई प्रतिष्ठा नहीं है न ही आत्म विकास का भाव, उनकी जीवन आगे बढ़ने की कोई मंज़िल नहीं है । यौन चेतना के मोह में नैतिक मूल्यों को कोई महत्व नहीं देती है । प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने दृष्टिकोणों से जी रहा है । आदर्श तथा संकल्प जैसी उनके जीवन में है ही नहीं आधुनिकता के संदर्भ में व्यक्तिगत एवं सेक्स को आधार मानकर सामाजिक तथा नैतिक मान्यताओं को नकारा गया है । जीवन जीने का सही मूल्य उनके जीवन में नहीं है । लेखक ने आधुनिक बोध के साथ नेगिया गाँव के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । अत: "सफेद मेमने" में टूटते हुए संबंध तथा यौन वासना के आधार पर बनते हुए संबंधों का चित्रण किया है , इसके पात्र यौन पीड़ा से पीड़ित होकर मानव-मूल्यों को नकारते हुए जी रहे हैं । उनका कोई दायित्व नहीं और न ही आदर्श है । यह उपन्यास युगीन परिवेश के घुटनपूर्ण वातावरण का यथार्थ उदाहरण है और साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों को उद्घाटित करता है

18- "बेघर" (1971) ममता कालिया

ममता कालिया ने "बेघर" उपन्यास में नर नारी के पारिवारिक जीवन-समस्याओं को संभोग संदेह में बदलकर पति पत्नी के संबंध को तोड़ता है । ममता कालिया ने जीवनग्रस्त कुण्ठाओं, निराशाओं, असंतोष, अन्तर्विरोधों, असामानताओं, संवेदनाओं, इच्छाओं, कार्य कलापों तथा विविध असंगतियों को वास्तविक ढंग से प्रस्तुत किया है । द्वितीय महायुद्ध के प्रभाव से मानव-मूल्य बदल रही है । स्वतंत्रता के पश्चात् परिवर्तित जीवन-मूल्यों को समाजिक, आर्थिक नैतिक एवं व्यक्तिगत चेतना के संदर्भ में प्रस्तुत किया है ।

"बेघर" का नायक पुराने विचारों एवं संस्कारों से ग्रस्त है । वह सर्वप्रथम यह सोचता है कि संभोग के समय उसकी पत्नी चीखी चिल्लाई नहीं है । अवश्य इसका किसी अन्य पुरूष से संबंध रहा होगा । नायक परमजीत विवाह से पुर्व पत्नी का किसी अन्य पुरूष से देह संबंध न होना चाहिये इसीलिए वह नारी की पवित्रता व शील चीख पुकार और खुन से मानता है । वह नारी की भावना तथा उसके समर्पण को नहीं देखता है । बस शारीरिक पवित्रता तथा शील को महत्व देता है । तत्पश्चात वह अपनी संजीवनी को छोड़कर एक फुहड़ रमा नारी से विवाह कर लेता है । रमा इतनी कंजुस होती है कि परमजीत का जीवन घुटन, और ठहराव से भर जाता है । वह रमा जैसी फुहड़ तथा कंजुस से शादीकरने के बाद वह अकेलेपन तथा खालीपन से भर जाता है । अंत में वह मर जाता है ।

"बेघर" में व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अन्तर्गत परमजीत संजीवनी के साथ मुक्त यौन संबंध करता, बाद में शादी करता है । परमजीत संजीवनी के साथ देह संबंध स्थापित करने पर उसके कुंआरेपन कीपहचान नारी की चीख पुकार तथा खुन से करता है । वह पुराने विचार तथा संस्कार से चिपका हुआ होता है । विज्ञान की उन्नति के साथ उसका भी नया दृष्टिकोण दृष्टव्य है । किन्तु वह संजीवनी का प्रेम, उसका समर्पण तथा प्रफुल्लित स्वभाव को नहीं देखता है । परन्तु परमजीत तो "पहला" न होने का दुख इतना असर करता है कि दोनों की राहें अलग हो जाती हैं । इसमें कहने का अन्दाज भिन्न है ।उपन्यास में संजीवनी उदारता, सहिष्णुता, प्रेम,ममता तथा कर्तव्यनिष्ठता की प्रतिमा माना गया है । जो महिमामयी तथा ममतामयी नारी है । किन्तु रमा इन समस्त गुणों से परे कंजुस विचारों से युक्त होती है । परमजीत नारी देह संदेह में चरित्र की गहराई नहीं आंकी है । वह न परिवार की प्रतिष्ठा का ध्यान रखता है न मर्यादा न सामाजिक नैतिक मान्याताओं को स्वीकार करता है । "पहला" नारी देह का मोह उसे मृत्यु तक पहुंचाता है । अतः उपन्यास की संरचना में आधुनिकता का बोध एकदम नहीं बल्कि धीरे धीरे होता है । परमजीत अकेला है कुंवारेपन की धारणा उसकी दिशा बदल देती है । वह

संजीवनी से टूटकर, अपना निजत्व खो बैठता है । अपने परिवेश से कर जाता है । वह पति तथा बाप तो बन जाता है किन्तु अपना अस्तित्व खो देता है । यह मूल्य परिवर्तन की आधुनिक प्रक्रिया सवत: गुजर है ।

"बेघर" में बदलते हुए व्यक्तिगत दृष्टिकोण, यौन समस्या से विघिटित पारिवारिक संबंधों के मूल्य तथा नये संबंध , संदेह युक्त नारी देह का कंवारेपन की परख चीख पुकार तथा खून का निकलना, आदि बातें दाम्पत्य जीवन-मूल्यों को तोड़ती हैं । यह परमजीत के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजडी है । "बेघर" उपन्यास में नये विचारों आचारों तथा व्यवहारों की बातें कही गयी हैं ।और सामान्य मानव जीवन का चरित्र चित्रण है । उसकी असम्बद्धता, अकेलेपन, अजनबीपन दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों तथा आधुनिक जीवन का प्रभाव से परम्परागत जीवन मूल्य टूटे हैं । नये आचरणों व व्यवहारों से नये मूल्यों की सृष्टि भी हुई है । "बेघर" शिल्प की दृष्टि से नयापन, तथा आधुनिक प्रयोगों तथा प्रतीकों को लेकर चला है ।

19 - "सूरजमुखी अंधेरे के" (1972)

- कृष्णा सोबती

लेखिका कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास "सूरजमुखी अंधेरे के" माध्यम से "रत्ती" के कड़वे अनुभव की कहानी प्रस्तुत की है । स्त्री के साथ बचपन में बलात्कार हो जाता है । उसके जीवन में अनजाने और अनचाहे ही कलंक लग जाता है । इसलिए उसके सहपाठी उसे चिढ़ाते हैं । वह अपने को अपमानित अनुभव कर उन्हें बहुत पीटती है । और बचपन में ही निर्भीक, ढीठ,व स्वच्छंद प्रवृति वाली हो जाती है । और उत्तेजनाहीन होकर दैहिक सुखभोग के प्रति जड़वत हो जाती है । युवावस्था में उसकी स्वच्छंद वृति व विचार और तीव्र हो जाते हैं । उसके जीवन में राजन् ,श्रीपत, भानुराव, सुमेर, सुब्रामनियम आदि अनेक पुरूष आते हैं, किन्तु उसकी जड़ता को देखकर निराश लौट जाते हैं । कोई भी रत्ति की जड़ता को दूर नहीं कर पाता । अंत में दिवाकर उसके साथ शारीरिक सम्बंध स्थापित कर उसकी जड़ता दूर करता है ।

इस प्रकार लेखिका ने यहाँ आधुनिक नारी की विडम्बनापूर्ण स्थिति का चित्र उपस्थित किया है । आधुनिकता के मोह में बँधी नारी चौराहे पर भटक रही है । साठोत्तर युग की नारी बलात्कार के कलंक को लेकर पूर्वयुगीन नारी की तरह आत्महत्या नहीं करती, अपितु अनेक पुरूषों के साथ सम्बन्ध बनाती है, किन्तु अपनी जड़ता के कारण ही निराश हो जाती है ।" वह एक गीली लकड़ी बन जाती है जो सुलगने पर धुँआ ही देती है ।"[34] लेखिका ने मन फ्रायड्वादी सिद्धांत के आधार पर स्वच्छंद कामवृत्ति का चित्रण किया है तथा आधुनिक नारी की काम कुण्ठा को मनोवैज्ञानिक आधार पर उभारा है ।

अतः हम कह सकते हैं कि "सूरजमुखी अँधेरे के" की लेखिका कृष्णा सोबती ने वैयक्तिक काम कुण्ठा को लेकर सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के प्रति विद्रोह को प्रस्तुत किया है, जो आधुनिक बोध को उजागर कर साठोत्तर युग की नारी चेतना का समर्थन करता है ।

20- <u>"सूखता हुआ तालाब" -(1972)</u>

- "राम दरश मिश्र"

"राम दरश मिश्र" के उपन्यास "जल टूटता हुआ" में स्वाधीनता के बाद का चित्रण प्रस्तुत किया है । और "सूखता हुआ तालाब" पहले उपन्यास के क्रम को आगे बढ़ता हुआ, समकालीन ग्रामों के बदलते जीवन-मूल्यों का उद्घाटन करता है । आज के गाँव, परिवेश के दबाव के कारण, वैयक्तिक व सामाजिक स्तर पर टूट रहे हैं । इसी संदर्भ में उपन्यास में, भ्रष्ट राजनीति, स्वार्थी दल-बंदी , पद लोभी प्रवृति और इसके कारण दलबदली, अनैतिक सामाजिक प्रथाओं व मूल्यों का पर्दाफाश किया गया है । लेखक ने बड़ी सूक्ष्मता से नये रूप को धारण करते व नयी चुनौतियों को स्वीकारते हुये, गाँवों का निरीक्षण किया है । देवप्रकाश व चेनइया के माध्यम से वैयक्तिक व वर्गीय अन्तर्विरोध और उससे उत्पन्न तनाव पूर्ण स्थिति को देखा जा सकता है ।

उपन्यास का कथानक सीमित होते हुये भी समस्त आधुनिक विडम्बनाओं,

समस्याओं, भ्रष्ट राजनीति की कुचालों व उससे उत्पन्न विषम स्थिति को समेटे हुए है । इस उपन्यास के पात्र यथार्थ की भूमि से लिये गये जीवन्त पात्र हैं । राजनीति के भ्रष्ट नेता के रूप में मोती लाल मुखौटेबाज कम्युनिस्ट नेता हैं, जिसकी कथनी एवं करनी में समानता नहीं है । वे अपने अपने नौकर मुरतिया की पिटाई का विरोध न करके उसके पिटने का समर्थन करते हैं । अपने छोटे भाई की बहू के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं और उसे शरीर की आवश्यकता मान कर धर्म के साथ जोड़ते हैं । और जब गांव में वितंडावाद खड़ा होता है तो पूजा-पाठ और भोजादि से शान्त करते हैं और स्वार्थ से बंध कर अपने दोस्त व धूर्त शामदेव का समर्थन करते व करवाते हैं । इस प्रकार के भ्रष्ट नेता । भारत में कहीं भी देखने को मिल जाते हैं, जो देश सेवा कम, अपनी सेवा अधिक करते हैं । धर्मेन्द्र चरित्रहीन व पाखण्डी मास्टर है , जो निम्नवर्गीय चेनइया के साथ बलात्कार करते हैं, किन्तु जब उसके भाई का हाथ उनके प्रसाद को छू जाता है तो उसका जवाब थप्पड़ से देते हैं । इसी प्रकार शामदेव शिवलाल, राम लाल आदि पात्र इसी कोटि के हैं । धूर्त ,चालाक एवं चालबाज़ । इस उपन्यास का महत्वपूर्ण पात्र है देव प्रकाश जो गांव के जीवन को सरल स्वच्छ व स्वाभिमान पूर्ण मानकर पांच वर्ष पहले स्टेशन मास्टर को पीटकर व नौकरी को लात मार कर इज्जत दार जीवन जीने अपने गांव लौट आता है । बाद में वह न केवल वह अकुलाहट अनुभव करता है अपितु षड्यंत्रों व कुचालों से टूट आकर चुपचाप फिर नौकरी करने शहर की ओर चल देता है । आज गांव की स्थिति भीऐसी हो गयी है कि या तो वहां नपुंसक रह सकता है या बदमाश ।

जैसाकि उपन्यास का शीर्षक है ,उसी का अनुरूप ही कथा है । गांव का "रामी" तालाब जिस पर कभी धर्मानुष्ठान हुआ करते थे, जहां कभी सामूहिक कथा-वार्ताएं होती थीं, जिसके स्वच्छ व निर्मल जल में गांव वासी स्नान कर अपने को पवित्र समझते थे, उसी तालब का जल सूख गया है ,उसमें कीचड़ के साथ साथ दुर्गन्ध भी आने लगी है । -रामी- तालाब के जल का सूखना अर्थात् हमारे परम्परागत सामाजिक, धार्मिक, नैतिक मूल्यों का सूखकर स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अनैतिकता व आडम्बरों की दुर्गन्ध का फैलना है । वस्तुतः रामी तालाब गांव की टूटती व मूल्यहीन जिन्दगी का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है ।

आज गांव-गांव में भौतिकवादी युग की छाया परिलक्षित हो रही है । वहीं के दैनिक जीवन के क्रिया-व्यवहारों में भी राजनीति घुस गई है । जहाँ पहले एक घर की बेटी, पूरे गांव की बेटी मानी जाती थी, उसकी इज्जत आबरू की रक्षा, अपनी इज्जत आबरू मानी जाती थी, वही अब गांव के एक घर की बेटी पूरे गांव का बोझ अपने गर्भ में उठाये, अपने ही गांव के कारण वेश्या बन जाती है । शिवलाल लड़की के साथ बलात्कार तो करता है मास्टर धर्मेन्द्र, किन्तु नाम लगता है रविन्द्र का । क्योंकि शिवलाल व धर्मेन्द्र एक ही राजनीति गुट के हैं, इसलिए शिवलाल का बेटा राम लाल धर्मेन्द्र का पक्ष लेता है और अपनी बहन के साथ हुये अवैध सम्बन्ध को भी मान्य कहता है । इसी तरह गांव के नियन्त्रता ग्रामदेव, शिवलाल आदि भी यौन को आवश्यकता मानकर धर्म से जोड़ते हैं । इस प्रकार मिश्र जी ने स्वच्छंद यौन चेतना के नाम पर फैली यौन विकृति को चित्रित किया है । असी यौन विकृति के कारण टूटते-बनते सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों को अन्तर्मन की विषम स्थितियों को तथा कुण्ठाओं की यथार्थ रूप से उद्घाटित किया है ।

इस समूचे उपन्यास में केवल एक पात्र है जो देव प्रकाश जो स्वाभिमान, ईमानदारी, सच्चाई, प्रेम, सद्भाव ,स्नेह आदि परम्परागत मूल्यों को स्वीकार करता है किन्तु वह ग्राम समाज से बहिष्कृत है , क्योंकि उसके छोटे भाई रामावतार ने जो विधुर थे, पड़ोसी गांव की पासिन से प्यार किया था, जबकि शिवलाल, धर्मेन्द्र आदि यह कार्य रोज पर्दे के पीछे से करते हैं, फिर भी देवप्रकाश परम्परागत मूल्यों की रक्षा के लिए कदम-कदम पर ठोकरें सहता है । अत्याचार का पग-पग पर विरोध कर, अन्त में टूटते-टूटते वह अपने योग्य साथी शंकर को चुनाव जीताकर सरपंच बना देता है । किन्तु अंत में स्वयं टूट कर गांव से पलायन कर लेता है । विचरों के संघर्ष में वह अपने मूल्यवादी विचारों से लड़ता है और ऊहापोह में फंसा अपने बेटे को मन ही मन संबोधित हो कह उठता है - "तू बन जा, तुझे जो बनना हो । जीने के लिए जरूरी है ।- हां, जरूरी है । ....जीने के लिए । जीने की परिभाषा जैसे कोई एक आवाज भीतर से निकल कर फांस रही है .. जीना... क्या वह जीना नहीं है, जिसे वह सबके विरोध

के बावजूद जी रहा है । .... क्या अपने वैशिष्टय को खोकर भीड़ में खो जाना ही जीना है ...... ओह कुछ समझ में नहीं आ रहा है ।"[35]

इस प्रकार दशरथ मिश्र ने "सूखता हुआ तालाब" में कृत्रिमता, धार्मिक व सामाजिक बाह्याडम्बरों, पुरानी गली-सड़ी परम्पराओं, स्वार्थीपन आदि पर गहरी चोट कर अभिशप्त वर्गों की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी तरह की असहनीय पीड़ा को सही अभिव्यक्ति प्रदान की है । आधुनिक परिवेश में भौतिक चकाचौंध , फैशनपरस्ती, भ्रष्ट राजनीति, आर्थिक विषमता के कारण टूटते ग्रामीण मूल्यों, फीक पड़ते नाते-रिश्तों, पारिवारिक संबंधों का सही चित्रण बड़ी तटस्थता व ईमानदारी के साथ किया है ।

21- "धरती धन न अपना" §1972§ जगदीश चन्द

यह उपन्यास पंजाब के एक छोटे "छोटे वाहा" ग्राम के चमादड़ी मोहल्ले को केन्द्रित करके, दलित वर्ग की मानसिकता को अभिव्यक्ति दी है । इसमें नई चेतना और उनके जीवन संघर्ष के नये जीवन-मूल्यों का मूल्यांकन है । युगों से पिसते आ रहे दलित वर्गों की भावनाओं, आकांक्षाओं आवश्यकताओं तथा संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया है । लेखक ने उनकी यातनाओं का यथार्थ चित्रण इस प्रकार किया है - "आर्थिक अभावों की चक्की में युग-युगान्तरों से पिस रहे हरिजन अब भी मध्यकालीन यातनाओं को भोग रहे हैं । जिस भूमि पर वे रहते थे, जिस जमीन को वे जोतते थे, यहाँ तक कि जिन छप्परों में वे रहते थे, कुछ भी उनका नहीं था । इन्हीं बातों को देखकर मेरे किशोर मन की वेदना सहया अपने सभी बांध तोड़कर फूट निकली और मैंने उपेक्षित हरिजनों के जीवन का चित्रण करने का संकल्प कर लिया ।"[36]

- यह उपन्यास व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को लेकर चलता है । करूणा, दया, परोपकार, मैत्री, साहचर्य, मदद आदि की भावना ऊपरी सतह तक विद्यमान है । "धरती धन न अपना" उपन्यास का प्रारम्भ तथा अन्त काली से होता है । वह गाँव हो रहे अत्याचारों तथा यातनाओं का यथार्थ चित्र देखता है । जीतू की चौधरी हरनाम सिंह द्वारा निर्मम मार से उसका हृदय पिघल जाता है ।

उसकी यथासम्भव सेवा करता है । उसके बाद भी काली पर वह आरोप लगाता है । गाँव की दलित औरतें जाटों से द्वारा भोगी जाती हैं, गाँव में लच्छो, प्रीतो, पाशो अपना देह बेचती है । मंगू चोरी करता है । फत्तू कहता है कि "इस मुहल्ले में शराफत नहीं रही"[37] काली और ज्ञानो का स्वच्छंद प्रेम चलता है । विवाह से पहले ज्ञानो का गर्भ रह जाता है तो काली को अनेक यातनायें मिलती हैं और वह शहर चला जाता है । ज्ञानो को जहर देकर मार दिया जाता है ।

सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों ही धरातल पर काली और ज्ञानो का जीवन संघर्षपूर्ण है । गाँव में चमारिन के साथ यौन संबंध रखते हैं फिर भी छुआछूत की भावना विद्यमान है । सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास वर्ग चेतना के कारण होता है । गाँव में कानून कचहरी तथा सामाजिक नियम व्यक्तिगत स्वार्थों तक सीमित हैं । गाँव में झूठी गवाही देना "अर्थ" अर्जन का साधन बन गया । गाँव की पवित्रता तथा आदर्श बिखरा गया है । ईमानदारी, सच्चाई तथा भलाई टूटती जा रही है । उपन्यास का नायक काली शहर से लौटकर "मजदूर संगठन" बनाता है और जमींदारों के विरूद्ध स्वर फूंकता है । सामन्ती तथा जमींदारी व्यवस्था के प्रति लड़ता है । आज नयी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में दलितवर्ग जागरूक हो रहे हैं । सामाजिक तथा नैतिक बंधनों के प्रति विद्रोह की चेतना परिलक्षित है । वे अपने श्रम के मूल्य को समझने लगे हैं । काली हरिजन वर्ग का नेता बन कर हरनाम सिंह जमींदार से टक्कर लेता है ।

अतः आधुनिक युग के दलित तथा पिछड़े वर्ग में जागरूकता आ रही है। उनका समाज में अपना अस्तित्व है ऐसा समझने लगे हैं । इस वर्ग चेतना के संघर्ष में काली टूटता अवश्य है कि हिम्मत नहीं हारता है वह नये वर्ग का प्रतीक है । वह ईमानदारी, परोपकार, सद्भाव , दया, करूणा, अहिंसा, सच्चाई तथा सहयोग में विश्वास करता है । यह उपन्यास साठोत्तर भारत के दलित वर्ग की भावना को "अर्थ" तथा "काम" के आधार पर मूल्यांकन करता है । इसमें वर्ग चेतना के समक्ष सामाजिक धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है ।

राजनीतिक वातावरण ने भी परम्परागत मूल्यों को विघटित किया । और यह उपन्यास साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों को उजागर करता है ।

22- "काली आंधी" §1974§ -कमलेश्वर

कमलेश्वर कृत "काली आंधी" उपन्यास राजनीतिक उपन्यास है । इस उपन्यास में नारी के सक्रिय रूप से राजनीति में भागने से, पारिवारिक जीवन-मूल्यों का विघटन होता है । मालती, जग्गू बाबू और लिली के अलग अलग होने, और उनके मानसिक तनाव तथा कुण्ठा को अभिव्यक्त की कहानी है । मालती राज-नीतिक स्तर पर अपने, पति व पुत्री के संबंधों को नकारती हुई एक कुशल राजनीतिज्ञ बन जाती है । वह शिक्षित और आधुनिक का प्रतीक है । नारी आत्म गौरव, नारी स्वातंत्र्य भाव, आधुनिक बोध ,महत्त्वाकांक्षा, दिशाहीनता, तथा युगीन परिवेश की जटिलताओं का सुन्दर चित्रण है । उपन्यास राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित है ।

"काली आंधी" उपन्यास में मालती मात्र धनाढ्य पिता प्रतापरूप जो उच्चकोटि के बैरिस्टर हैं, की एकमात्र पुत्री है । वह एक होटल के मालिक की जग्गू बाबू और मालती का परस्पर प्रेम विवाह हो जाता है और जग्गू बाबू होटल का कार्य सम्भालते हैं । मालती जग्गू तथा अन्य लोगों के उकसाने पर राजनीति में आती है । वह निरन्तर चुनाव जीतती चली जाती है । प्रथम म्युनिसिपल के चुनाव में विजयी होती है । तत्पश्चात् लोकसभा के चुनाव तक पहुँचजाती है । वह आंधी के समान राजनीति में आती है, और बड़ी नेता बन जाती है । अब जग्गू द्वारा होटल का कार्य भार सम्भालना, उसे अपमानजनक लगता है । इसीलिए जग्गू उपेक्षित सा अनुभव करके भोपाल गोल्डन होटल का मैनेजर बन जाता है । मालती भोपाल क्षेत्र से चुनाव लड़ती है तो वहाँ उन दोनों का पुनर्मिलन होता है । किन्तु बाद में मालती और जग्गू पारिवारिक जीवन नहीं बिता पाते हैं ।

केवल राजनीति आधार पर पारिवारिक जीवन-मूल्यों तथा संबंधों का

विघटन का उपन्यास है । मालती एक कुशल नेता के रूप में चुनाव जीतने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपनाती है । जैसाकि प्राय: राजनीतिज्ञ सत्ता प्राप्त करने के लिए गुंडागीरी, भ्रष्टाचार, चालबाज, दल बदल नीति, अमानवीय व्यवहार तथा अनेक अनैतिक कार्य करती है । आज के नेता वर्ग, समाजवाद, साम्यवाद तथा एकता, राष्ट्रीयता की दुहाई देते हैं । तथा "गरीबी दूर करने, रोजगार दिलवाने तथा जनता की भलाई को लेकर दुहाई देते हैं । इस झूठे आश्वासन में कितनी सच्चाई, कितना झूठा है लेखक ने व्यंग्य किया है । मालती जनता के सामने आकर उन्हें अनेक प्रकार के आश्वासन देती है, किन्तु इसकी तह में स्वार्थता जातीयवाद, भाई भतीजावाद, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयवाद एवं अभारतीयता को महत्त्व देती है ।

नि:संदेह यह कहा जा सकता है कि मालती एक ओर कुशल नेता तो बन जाती है, किन्तु कुशल गृहणी व पत्नी नहीं बन पाती है । वह नारी स्वातंत्र्य तथा आत्म गौरव की भावना के कारण पति से समझौता नहीं कर पाती है और न लिलि को महत्त्व दे पाती है । वह सदियों से चले आ रहे सामाजिक व नैतिक बंधन को सहज रूप से त्याग देती है । घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर सुख और उन्मुक्त जीवन को महत्त्व देती है । आधुनिक नारी ने अपना अवगुंठन उतार फैंका है , लाज ,शर्म, शील, पतिसेवा, ममत्व, स्नेह का भाव, कौटम्बिक लगाव, दाम्पत्य जीवनादर्श को अस्वीकार करती हुई अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण कराने में लगी है । मालती राजनीतिक क्षेत्र में आकर पर पुरूष के साथ यौन संबंध स्थापित तो नहीं करती, परन्तु दाॅम्पत्य जीवन व ममत्व को नकारती है । अत: जहाँ उपन्यास में एक ओर परम्परागत जीवन-मूल्यों का विघटन हुआ है , वहाँ दूसरी ओर नये मूल्यों का विकास भी हुआ है । त्याग, दायित्व, सद्भावना, सहिष्णुता, पवित्रता, आदि मूल्यों की स्थापना भी हुई है । इसके साथ मालती अपने में पवित्र है, सुसभ्य है, गम्भीर है । अत: इस उपन्यास में नारी स्वातंत्र्य तथा उसकी बढ़ती हुई महत्त्वाकांक्षाओं का चित्रण किया है ।

23- "मुरदाघर" (1974)

- जगदम्बा प्रसाद दीक्षित

जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का मुरदाघर महानगर की जिन्दगी का नग्न चित्र उपस्थित करता है । इस उपन्यास में पुरानी समस्या को नये ढंग से उठाया गया है । साठोत्तर युग से पूर्व वेश्या को समज का कलंक माना जाता था । पुराने लेखकों विशेषत: प्रेमचन्द्र ने इस समस्या का हल आदर्शपूर्ण तरीके से सुझाया है , जो अव्यवहारिक सिद्ध होता है । किन्तु जगदम्बा प्रसाद ने इस समस्या का मूल कारण आर्थिक शोषण माना है , और इनका विश्वास है कि आर्थिक प्रणाली में अन्तर लाये बिना इस समस्या का हल नहीं हो सकता । लेखक ने वेश्याओं व इसी वर्ग के अन्य लोगों से सहानुभूति रखते हुये, उनको ~~कककक~~ आवाज़ दी है । मैना, रोज़ी, हसीना, मरियम, चमेली, सुभद्रा, काजी छोकरी आदि अपनी पेट की आग शान्त करने के लिए शरीर बेचती हैं । जिस रात वे ग्राहक नहीं फंसा पाती, उस दिन उन्हें चाय तक नसीब नहीं होती । खाली पेट लिये वे दूसरों का मुंह ताकती रहती हैं, या दुकानदार से मिन्नतें करती हैं, जिसने उन्हें उधार देना बंद कर दिया है ।

बम्बई की भव्य इमारतों के बीच इन वेश्याओं की झुग्गी-झोंपड़ियां हैं, इनकी आंखों में भी भविष्य के सुनहरे सपने हैं कि कभी तो इस नरकीय जीवन से छुट्टी मिलेगी और इज्ज़त की रोटी खायेंगी, किन्तु इनका जीवन मजबूरियों, कमीनेपन व सड़ांध से भरा है, और ये इसे जीन अभिशप्त हैं । पोपट मैना से कहता है - "मेरी ज़िन्दगी में खाली एक बात है... तेरे को चाली में खोली लेके देना... तेरे को इधर से ले जाना । और मैं तेरे कूं बोलता मैना याद रख ..... एक दिन मेरा टैम जरूर आयेगा... तब तुम बोलना मेरे कूं.... ।"[38] पोपट अपनी इच्छा को पूरी न कर सकने के कारण चोरी करता है । थाने में दरोगा उसकी खूब ठुकाई करता है । क्रूर समाज यह स्वीकार नहीं कर पाता । समाज में इसके अतिरिक्त भी इज्जत दार चोर हैं । इसलिए मैना कहती है -"पोलीस का लोक तो रंडीलोक से भी खराब है । पैसा के वास्ते कुछ भी करेगा ।[39] किन्तु मैना की बात कोई नहीं सुनता ।

इस उपन्यास में पागल का कचरे ढेर से कुछ उठाते हुये गालियाँ देना "प्रतीक" है । दो काँपते हुये पैरों का ऊपर उठना और असहनीय पीड़ा को सहते हुये भविष्य के स्वप्न देखता, आज की विषम स्थितियों से संघर्षरत व्यक्ति का जीवन के प्रति आस्थावान् होने की ओर संकेत करता है ।

इस प्रकार लेखक ने "मुरदाघर" उपन्यास में महानगरीय जीवन की नरकीय सड़ाँध युक्त जिन्दगी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है । आर्थिक शोषण से फैली सामाजिक बुराईयों की ओर संकेत किया है । तथा प्रेम, सहानुभूति, दया आदि परम्परागत मूल्यों को नये संदर्भ में नये कोण से परखा है । मजबूरियों के कारण बनी वेश्याओं को घृणा से नहीं किन्तु सहानुभूति से देखा है , यह लेखक का प्रशंसनीय कार्य रहा है । उपन्यास में आधुनिक मशीनवत् मानव का चित्र तो अंकित किया ही है साथ ही उसकी संवेदनाओं तथा विडम्बनाओं को भी उदघाटित किया है । इसमें आधुनिक बोध से पनपे नये मूल्यों को भी उभारा है । कुल मिलाकर यदि यह कहा जाये कि "मुरदाघर" उपन्यास, उपन्यासों की श्रृंखला में महत्वपूर्ण कड़ी है तो, अतिशयोक्ति न होगा ।

24- "कभी न छोड़े खेत"§1976§

जगदीश चन्द्र कृत "कभी न छोड़े खेत" यह दूसरा उपन्यास है ,इसमें आजादी के पश्चात् भारतीय जन जीवन और कृषि व्यवस्था ग्राम शासन व्यवस्था, तथा चुनाव प्रणाली राजनीतिक गतिविधियों पर आधारित हैं । व्यक्तिगत जीवन में बदलती व्यक्ति की धारणाएं एवं दृष्टिकोणों ने परम्पराओं, व मान्यताओं के प्रति विद्रोह की चेतना परिलक्षित है । साथ ही वैयक्तिक जीवन में काम भावना ने नये वर्ग, नई जाति व्यवस्था और व्यक्ति प्रतिष्ठा के मूल्यों की सृष्टि की । शोषित वर्ग सामन्ती तथा जमींदारी प्रवृत्ति को नकार रहा है ।

साठोत्तरी उपन्यास में सामन्तों तथा जमींदारों का अन्त और उनके स्थान पर नेताशाही वर्ग उदय हो गया है । इससे देश में एक नया मोड़ आया । गावं में इस सामन्तीय जीवन के नष्ट हो जाने पर भी उनके अधिकार,अत्याचार

तथा दुर्व्यवहार की भावना अभी अवशिष्ट है । लेखक ने नम्बरदारों तथा नीलो वालिये की पुश्तैनी दुश्मनी को लेकर लिखा है । जिसमें ग्राम के जाटों, नम्बरदारों, गूजरों ,यादवों, ठाकुरों आदि मध्यवर्गीय किसानों की पुश्तैनी दुश्मनी की कहानी है । ये किसान मामूली बातों पर खून कर डालते हैं फिर थानों, कचहरियों व सरकारी दफ्तरों में चक्कर लगाते फिरते हैं । न्यायालयों में हाकिम के समक्ष सीधे बन जाते हैं । और सरकारी कर्मचारियों तथा वकीलों को रिश्वत के लिए उकसाते हैं । आज देश में यह व्यवस्था सर्वत्रत: दिखाई देती है । लेखक एक स्थान पर कहता है कि "जाट की कोठड़ी में चोखे दाने हों, फसल अच्छी नजर आये तो लड़ाई का बहाना तलाश करने में क्या देर लगती है ।"[40] भारतीय किसान भ्रष्टाचार, रिश्वत तथा झूठ से घृणा करता था वहाँ आज सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत देते हैं । गांव में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा सामन्ती संस्कार विघटित हो रहे हैं ।

अत: यह कहा जा सकता है कि गाँव अपनी पुरानी रीति रिवाज मर्यादा तथा नैतिकता को छोड़ रहा है । आज उसमें नयी चेतना आ रही है । राजनीति को लेकर भाई भतीजावाद, जातीयवाद तथा अपनेपन की भावना घर कर गयी है । सद्भाव, परोपकार, एकता, दया ,प्रेम तथा सहानुभूति आदि सभी टूटरहे हैं । गरीब को डराकर, उनसे झूठी गवाही दिलवाई जाती है । सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक मूल्य राजनीतिक विषमता तथा अर्थ के आधार पर नष्ट हो रहे हैं । शिक्षा तथा वैज्ञानिक विकास ने प्राचीन जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया और शहरी सभ्यता ने उसके रहन सहन तथा आचार-विचारों को आकृष्ट किया अत: सन् 1960 के बाद ग्रामीण वातावरण में जितना परिवर्तन आया उतना पूर्व-वर्ती युग में नहीं आया था । क्योंकि गाँव की गली-गली में राजनीति घुस गयी है जिसने व्यक्ति को स्वार्थी बना दिया है । गाँव के जीवन-मूल्यों का चित्रण अमरकान्त कृत "ग्रामसेविका" (1962), हिमांशु जोशी कृत ~~कककककककक~~ "वृक्ष फूलते तो हैं" (1965), रामचन्द्र तिवारी कृत "सागर सरिता और अकाल" (1966), सच्चिदानंद कृत "यारी की महक" (1969), ओम प्रकाश निर्मल कृत "बहता पानी, रमता योगी" (1969) आदि उपन्यासों में वर्ग चेतना, जाति-

व्यवस्था के प्रति नये विचार तथा नये दृष्टिकोण का अंकन किया है । इन उपन्यासों में दलित वर्ग में जागरूकता है और युगीन परिवेश में टूटते हुए न्याय, त्याग, सेवा, पवित्रता, संबंध, सदभाव, कर्तव्य ,सच्चाई, भलाई आदि शाश्वत् मूल्यों का अंकन किया है ।

ग्रामीण समस्या पर आधारित विश्वम्भर नाथ उपाध्याय कृत "रीछ" §1967§ उपन्यास में भारतीय जीवन के [illegible] विविध पक्षों तथा जीवन-मूल्यों का अंकन किया है । जिसमें प्रजातंत्रात्मिक मूल्यों के विकास के साथ साथ ग्राम्य जीवन रूढ़िवादिताओं, अंधविश्वासों तथा धर्माडम्बरों को नकार रहा है । वहीं पर परम्परागत जीवन-मूल्य टूट रहे हैं तो कहीं पर उनकी स्पष्ट छाप बनी हुई । अतः यह उपन्यास उपर्युक्त समस्त विशिष्टताओं को अपने में समाये हुए हैं जिनका वर्णन पूर्ववर्ती उपन्यासों में किया जा चुका है ।

25- "सहचारिणी" §1978§

मालती जोशी कृत सहचारिणी उपन्यास आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है । उपन्यास व्यक्तिगत आधार का है । सामाजिक बंधनों को नये परिवेश में तोड़ता हुआ, व्यक्तिगत नये उद्देश्यों की पूर्ति करता है । आर्थिक संघर्ष ने प्राचीन जीवन-मूल्यों को विश्रृंखलित कर नवीन मूल्यों की स्थापना का प्रयास यथार्थवादी स्तर पर किया है । मध्यवर्गीय परिवार की ह्रासोन्मुखी प्रवृत्तियों के द्वारा नैतिकता की टूटती हुई मान्यताओं का चित्रण है ।

नीलम व्यक्तिगत दृष्टिकोण रखने वाली नारी है । वह नौकरी करके आत्म निर्भरता के रूप में रहना चाहती है । किन्तु वह पूनम की चुभती हुई बातों से मानसिक पीड़ित है, उसके बौस की मां की मृत्यु के लिए आफिस कर्मचारी संवेदना व्यक्त करने जाते हैं । वह अतीत के विषय सोचती रहती है । वह अपने पति योगेश के कड़वे अतीत के विषय में सोचती रहती है कि गीता योगेश की लड़की है फिर भी वह अपने पुत्र रेणु के साथ अपनी पुत्री जैसा व्यवहार करती है । अचानक योगेश में मानसिक परिवर्तन आता है । वे दोनों

पति पत्नी होकर भी, सिर्फ देह धर्म ही निभा पाते हैं । परन्तु रवि के जन्म ने उन दोनों को करीब ला दिया किन्तु अधिक समय तक टिक न सके । नीलम एवं योगेश की दूरियाँ बढ़ती गयीं , योगेश अभिजात्य परिवार वालों से संबंध रखकर क्लब और पार्टियों में लगा रहता है । बोतलों पर बोतल खोलना, विदेश से डी0आई0जी0 से धनिष्ठता सीमा के लिए करता है । नीलम रेणु के साथ मायके जाती है तो उधर मुकुल और पूनम के रिश्ते ने नया मोड़ लिया ।

व्यक्तिगत स्तर पर उपन्यास में नीलम योगेश के साथ लव मैरिज करती है । योगेश ब्रहामणवादी विचारधारा को छोड़ अन्तर्जातीय विवाह करता है । योगेश की शादी बचपन में हो चुकी थी, वह लड़की अपने जीजा के साथ अवैध संबंध रखती थी जिससे गीता नाम की लड़की हुई । नीलम उदार विचारों की होने के कारण गीता को उतना ही प्यार देती है जितना रेणु को । योगेश आचरण संबंधी मूल्यों को महत्त्व नहीं देता है । नीलम उदात्त मूल्यों को स्वीकारती है । अपवित्र गीता को मानवता के नाते अपने पास रखती है । योगेश इसे सहन नहीं कर पाता है । दोनों में दूरियाँ हो जाती हैं । रवि का जन्मोत्सव मनाना प्राचीन परम्परा की स्थापना है । बाद में क्लबों और पार्टियों में ऊँचे लोगों से संबंध रखने के लिए उत्सुक रहता है । पति पत्नी में दूरियां हो जाती हैं । सीमा आधुनिक नारी की प्रतीक है । जिस पर विदेशी छाप पड़ी हुई है । सीमा और योगेश की बौद्धिक दृष्टि ने भौतिकवादी मूल्यों को जन्म दिया, क्लब, पार्टी तथा वोदिका आदि विदेशी प्रभाव है । योगेश नैतिक सामाजिक मूल्यों को अर्थहीन मानकर सीमा के साथ खुले आम घूमता है । वह कोरे आदर्श के सहारे जीना नहीं चाहता है ।"41

"सहचारिणी" में योगेश सामाजिक मान्यताओं को नकारता हुआ आधुनिक जीवन को महत्त्व देता है । आदर्शवादी जीवन-मूल्यों को छोड़कर यथार्थवादी जीवन को स्वीकार करता है । वह उच्च सोसाइटी की सभ्यता तथा संस्कृति में जीना चाहता है । इसीलिए योगेश का संबंध आभिजात्य और हाई सोसाइटी से कांटेक्टस रखता है । किन्तु नीलम ऐसा नहीं चाहती है । दोनों "एडजस्ट" नहीं कर पाते हैं । दोनों अलग अलग दृष्टिकोण से जीते हैं उनकी अपनी

नैतिकता, आदर्श, जीवन दृष्टि तथा जीवन मापदण्ड अपने हैं । इस अपनी दौड़ में कार्यकलाप, संकल्प ,व्यवसाय सभी भिन्न हैं ।

उपन्यास में नये संबंध बनाने, पुराने त्यागने में कोई मोह नहीं । उनके संबंधों में केवल औपचारिकता है ।निराश, असंतोष, खालीपन, झूठेपन, कर्तव्य-हीनता, अलगाव आदि के साथ साथ उपन्यास में मुक्त प्रेम, और जीवन की ऊँची उड़ान, बौद्धिकता अधिक, मानसिक उत्पीड़न अकेलापन, कुण्ठाग्रस्त जीवन का चित्रण है । नये प्रतिमान से प्रेम, अच्छाई ,पवित्रता, नैतिकता, सौहार्द्र उदारता ,समानता आदि शाश्वत भावों की स्थापना भी हुई है , मुकुल और पूनम के रूप में नये संबंध भी बने हैं । यह उपन्यास साठोत्तर युग के जीवन-मूल्यों का प्रतिपादित करता है ।

26- "महा-भोज" §1979§

मन्नू भण्डारी कृत उपन्यास "महाभोज" में सरोहा पूरे भारत के गाँवों का प्रतीक कहा जा सकता है । भ्रष्ट राजनीतिक ने गाँव का माहौल बिगाड़ दिया है । आज भी जमींदारों का शोषण, महाजनों के अत्याचार, आर्थिक वैषम्य, पुराने-नये मूल्यों की टकराहट और असमानता, भूमि समस्या, राजनीति धर्म तथा समाज को लेकर सरकारीकर्मचारी वर्ग तथा पुलिस का भ्रष्टाचार फैला हुआ है । जनता जिन मंत्रियों को अपने कल्याण तथा भलाई के लिए चुनकर कुर्सी तक पहुंचाती है । दासाहब मंत्री जैसे नेता उनके ऊपर अत्याचार करते हैं । उपन्यास में गाँव का विक्षुब्ध वातावरण चुनावों के कारण हो गया है । इस विषाक्त जीवन में व्यक्ति, व्यक्ति का हन्ता बन बैठा है । वहाँ कोई नैतिक मापदण्ड नहीं गया है । उनके जीवन में अन्याय ही अन्याय है ।

"महाभोज" हिन्दी धारा से अलग राजनीतिक उपन्यास है । बिसू की मौत को लेकर चलने वाली लेखिका ने भारतीय समाज में नेता,दासाहब,लाखनसिंह, सुकुल, सदाशिव, पाण्डये, आदि और धनी वर्ग के रूप में जोरावर के अत्याचारों को उठाया गया है । देश की राजनीतिक माहौल में दुविधापूर्ण, झकझोर देने

वाली सच्चाई न खुलने पाये की नीति अपनाई जा रही है । विसू की हत्या किसाने की और दण्डित किसको किया जा रहा है ।, भारतीय गांव की गरीब खेतिहर, मजदूर और ग्रामीण जनता का निर्मम शोषण, राजनीतिक आधार पर किया जा रहा है । राजनीति के दोगले, अगुओं, उनके पिट्ठुओं तथा चम्मचों का बोलबाला है । भारतीय समाज राजनीतिकी दोहरी मार से पीड़ित है । देश में अभावाग्रस्त वर्ग हमेशा से त्रस्त रहे हैं । बिसेसर की हत्या जमींदार जोरावर के द्वारा की जाती है । क्योंकि हरिजन वर्ग दासाहब से खिलाफ हो जायें किन्तु दा साहब राजनीतिक चालबाजों में माहिर है । उसके आगे सभी नेता मात खा जाते हैं । वह कुर्सी पर बने रहने के लिए पार्टियों के साथ षड्यंत्र रचता रहता है । जोरावर के द्वारा ऐसा जघन्य कार्य किया जाने का रहस्य अपनी फाइलों में रखता है । वह राजनीतिक आधार पर लोचन को मंत्री पद से हटाकर अन्य नेताओं को रूपयों की थैलियों में खरीद लेता है ।

"महाभोज" में दासाहब एक कूटनीतिज्ञ हैं । चुनाव जीतने के लिए सरोहा गांव में जाकर विसू के पिता हीरा से उद्घाटन कराता है । इससे हरिजनों के वोट मिले, मशाल पेपर पर रोक लगाकर ,दूसरी पार्टियों के विरूद्ध विज्ञापन दिलवाता है । विसू की मृत्यु की छानबीन के लिए सक्सेना इन्सपेक्टर को सरोहा भेजा जाता है । सक्सेना सच्चाई को लेकर चलता है और असली कातिल को पकड़ लेता है तो दासाहब तथा डी•आई•जी• दोनों ही उसे मूर्ख समझते हैं । वास्तविक रूप से वे यह नहीं चाहते, और सक्सेना धूर्त राजनीति को नहीं पहचान सका, उसके बदले, उसका स्थानान्तर कर दिया गया, यह उसे तोहफा मिला । एक ओर सक्सेना पत्नी के साथ ट्रेन में आंसू बहा रहा है , दूसरी ओर दासाहब एवं डी•आई•जी॰ पैग पर पैग चढ़ा रहे हैं । उनकी पत्नी गहनों से लदी हुई है । निर्दोष बिन्दु की पिटाई और उसपर विसू की मौत का इल्ज़ाम लगाया जा रहा है । उनके नेता, उनके साथ घिनौने आतंक करते हैं । चुनाव के समय उनकी भलाई, सुरक्षा, नौकरी ,समानता, गरीबी हटाओ के झूठे नारे लगाते हैं । उनके खोखले नारे के पीछे कुत्सित कार्य किये जाते हैं ।

"महाभोज" उपन्यास में सामाजिक चिन्तनधारा तथा राजनीतिक

धारा निरंतर बनी रही है । जीवन में इतनी विसंगतियाँ तथा विद्रूपताओं आ गयी हैं कि मानवता, समानता, नैतिकता, सद्भाव तथा सौहार्द्र ,त्याग आदि की अभिवृत्तियाँ नष्ट हो गयी हैं । पूँजीवादी तथा नेताशाही सभ्यता के साथ भारत्य जीवन अनेक विषमताओं से भर गया है । मानव प्रेम,उदारता, सहिष्णुता तथा मानव संबंध विघटित हो गये हैं । उपन्यास में पुलिस और सुरक्षा कानून की निष्क्रियता दिखाई है । लेखिका ने राजनीतिक आधार पर "देश सेवा" एवं "मानव सेवा" की आड़ को लेकर, स्वार्थ सिद्ध करने वाले नेताओं पर व्यंग्य कसा है ।

अत: "महाभोज" में राजनीति व्यक्तिपरक हो गयी है । प्रत्येक व्यक्ति अपना काम निकालना चाहता है । वह अपने स्वार्थ लिप्सा में आत्म केन्द्रित हो गया है । नेता कुर्सी से चिपका रहने के लिए अनेक प्रकार के षडयंत्र रचता है । मानवता का गला घोंटता है । गुटबंदी, तिकड़मबाजी, दलबाजी, पैंतरेबाजी आदि सरोहा गाँव में सब हो रहा है । राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्तिगत, समाजगत नैतिक, धार्मिक मूल्य भी टूट रहे हैं । यह उपन्यास भारतीय राजनीतिक वातावरण का सही रूप प्रस्तुत करता है । भारतीय जीवन-मूल्यों के परिवर्तन का कारण राजनीतिक गतिविधियाँ भी हैं । इसका गाँव गाँव में तथा व्यक्ति मन पर पड़ रहा है । इससे हमारे परम्परागत मूल्य टूट रहे हैं । अत: यह उपन्यास युगीन राजनीतिक चेतना का उपन्यास है ।

अन्य उपन्यास

सन् 1960 के पश्चात् का उपन्यास साहित्य कुछ नवीन तथ्यों, नये - आयामों तथा स्त्री-पुरूष के संबंधों में नवीन रेखाओं को लेकर चला है । जो संवेदना तथा शिल्प दोनों ही रूप से नये प्रयोगों में रचा गया है । कुछ उपन्यास विदेशी भाव भूमि को लेकर, कुछ द्वितीय महायुद्ध से पीड़ित जीवन को लेकर, कुछ पश्चिमी जिन्दगी की पीड़ा को संवेदनात्मक स्तर पर उभरे हैं,

कुछ आंचलिक जीवन को रूपामित कर भारतीय जीवन मूल्यों को चित्रित करते हैं । कुछ शहरीपन जीवन परिवेश में अनेक कटु अनुभवों, नये संबधों टूटते हुए संबंध व दाम्पत्य जीवन और मूल्य-संघर्षों का संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करते हैं । इस युग के बदलते हुए जीवन-मूल्यों का कारण नई अर्थवत्ता तथा यौन चेतना की नई दृष्टि रही है । कुछ उपन्यासों में भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश भी मिलता है । जो यथार्थ मानव जीवन के चित्र प्रस्तुत करते हैं । इस युग के उपन्यासों में चित्रित मानवीय मूल्यों का स्थान, स्वार्थ, आर्थिक लिप्सायें, राजनीतिक गतिविधियां कुर्सी की ललक, व्यक्ति टूटन, परिवार टूटन तथा बदलते हुए सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों व अतृप्त काम कुण्ठा ने ले लिया है । अतः प्राचीन तथा नवीन मानवीय जीवन की विडम्बनाओं ,पीड़ा, व संगतियों-विसंगतियों का चित्रण मिलता है । सातवें दशक के मानव जीवन में अत्यधिक कटुता आई है । प्राचीन जीवन-मूल्य अपना अस्तित्व समेटे हुए हैं ।

उसका शहर§1970§ प्रमोद सिन्हा कृत है । उपन्यास में आज के परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों का संकेत है । दाम्पत्य जीवन की घुटन, टूटन,मानसिक तनाव एवं ऊब का चित्रण है । लेखक ने आधुनिक वातावरण में आमुल, एवं नीरा तथा एग्नी के माध्यम से विवाह संबंधी समस्याओं को उठाया है ।

तमस§1973§ में भीष्म साहन ने राजनीतिक स्तर पर व्यक्ति की संवेदनाओ उसके कार्य कलापों तथा व्यवहारों का चित्रण किया है । हिन्दू मुस्लिम तथा सिक्ख समुदाओं का संघर्षमय चित्र प्रस्तुतकिया है । "तमस" में साम्प्रदायिक दंगे, टूटते हुए मानवीय मूल्य तथा संबंधों की कहानी है, जो ब्रिटिश सरकार की नीति पर आधारित है । मानवता, सद्भावना, नैतिक, सत्य,न्याय, अहिंसा, सदाचार जैसे चिरन्तन गुणों का अभाव रहा है ।

"आदमी वैसाखी पर§1973§ उपन्यास में यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने आधुनिक जीवन में बदलते पारिवारिक संबंध आर्थिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्रों में परखा है । नारी स्वातंत्र्य भावना एवं उसकी महत्वाकांक्षाओं ने परम्परागत जीवन मूल्यों को नकारा है । इन्दु सामाजिक, पारिवारिक तथा नैतिक मान्यताओं

को हेय समझती है । अन्त में उसके टूटने की कथा है ।

"कच्ची पक्की दीवारें" §1970§ में राम कुमार भ्रमर ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आधुनिक नगरों के समस्त वर्गों के कुंठित जीवन और उसके खोखलेपन पर दृष्टिपात किया है । उपन्यास में शारीरिक यौन लिप्ता का चित्रण व्यक्ति गत तथा आर्थिक स्तर पर माना है । चम्पा, काबेरी, आभा आदि पात्रों के माध्यम से बदलते जीवन-मूल्यों का अंकन किया है ।

अपना अपना मोर्चा§1973§ काशीनाथ सिंह, कांचघर §1971§ राम कुमार भ्रमर, जिन्दाबाद:मुर्दाबाद§1971§ दयानन्द वर्मा ने राजनीतिक वातावरण का यथार्थ चित्रण है । समाज में सेक्स समस्या, आर्थिक विवशताओं का अंकन किया है । कृष्णा सोबती कृत मित्रो मरजानी§1967§ में नारी की कामेच्छाओं का वर्णन किया है । परदेशी कृत औरत एक: चेहरे हजार §1967§ में सामाजिक कुत्सित जीवन का नग्न चित्रण किया है । श्याम व्यास कृत "एक प्यासा तालाब" §1967§ शिवानी कृत कृष्ण कली"§1969§ भैरवी§1969§ चौदहे फेरे§1965§ अपराधिनी§1971§ में नारी विवशता तथा नारी व्यथा का चित्र प्रस्तुत किये हैं ।

शान्ति जोशी के "शून्य की बाहों"§1969§ में नारी स्वतंत्रता, विदेशी अंधानुकरण का वर्णन है । गंगा प्रसाद विमल के तस्वीरें और साये§1969§ अपने से भला§1964§ लोहे की लाशें§1969§ , अमरकान्त का "काले उजले दिन"§1969§ आदि उपन्यासों में उपर्युक्त आधुनिक जीवनगत समस्याओं का उल्लेख है ।

आधुनिक जीवन में सबसे महान् संकट अपने अस्तित्व का है । महानगरीय परिवेश में अत्यधिक तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है । अस्तित्व-रक्षा के साथ साथ हो रहा मूल्य विघटन, औद्योगिक अशान्ति, जनसंख्या का दबाव, आवास समस्या तथा औद्योगीकरण के फलस्वरूप व्यक्ति मशीनी जीवन और आर्थिक ,समाजिक कारणों से पारिवारिक संबंधों में तनाव की स्थिति उपस्थिति हो गयी है । व्यक्ति चेतना ,शिक्षा, राजनीति तथा विज्ञान ने स्त्री पुरूष को दो भिन्न मन:स्थितियों पर खड़ा कर दिया है । परिणामत: हमारे

आचारों-विचारों, व्यवहारों, संकल्पों ,धारणाओं तथा दृष्टिकोणों में भारी अन्तर उपस्थित हो गया है । इसने नये और पुराने मूल्यों में टकराहट, व संघर्ष की स्थिति पैदा हो गयी है । जिनका चित्रण अर्थ तथा काम के आधार पर किया गया है । "एक चूहे की मौत, नंगा शहर, सर्वनाम, दूसरी बार, धूप छाही रंग, भ्रम भंग, बीमार शहर, एक पति के नोटस न आने वाला कल,कटा हुआ आसमान, शहर था, शहर नहीं, कालेज स्ट्रीट के नये मसीहा आदि की कृतियां पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्विरोधों और विसंगतियों की गुत्थियों को खोलते हैं तो "नंगा शहर" महानगर के माहौल में गरीबों के शोषण तथा शोषितों के विद्रोह की सफलता दिखायी गयी है ।

अत:आज का मानवीय जीवन विविध और बहुस्तरीय कोणों से होकर गुज़र रहा है । जिस विचित्र मन:स्थिति और विवशताओं का भोग युगीन व्यक्ति कर रहा है , उसकी सही और यथार्थ अभिव्यक्ति साठोत्तरी उपन्यासों में सहजता से देखी जा रही है । उसके बाह्य जगत् के चित्रण के साथ साथ अन्तर्मन में चल रहे द्वंद्व और संघर्ष का सजीव चित्र प्रस्तु करने में आज का लेखक प्रमुख्य रूप से सफल रहा है । जहां तक महानगरीय जीवन के मूल्यों के बदलने का प्रश्न है, वहां सर्वाधिक झटका नैतिक मर्यादाओं को लगा है । यौन संबंधों को लेकर नारी का चित्रण "बीमार शहर" में हुआ है । विवाहीन नारी दाम्पत्य तथा मातृत्व जीवन बिता रही है । "एक चूहे की मौत" की सोन्यिा अपने साहस नैतिक मानदण्डों की अवज्ञा करती है , तो "धूपछाही रंग" की चपला परम्परागत मुल्य-मर्यादाओं को स्वीकारती है । यह कहा जा सकता है कि समकालीन उपन्यासों में कहीं जीवन-मूल्यों का विघटन स्वरूप मिलता है तो कहीं उनका अंकन है ।

"निष्कर्ष"

पूर्व युगीन लेखक प्राय: पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों से प्रभावित हैं, जबकि समकालीन लेखकों की कृतियों में पति पत्नी के संबंधों का विघटन , अर्थ एवं काम के आधार पर चित्रण किया है । इसीलिए सन् 1960 के पश्चात् की कृतियां विषय वस्तु की दृष्टि से मानवीय संवेदनाओं, संकल्पों,प्रतिमानों,

अनुभूतियों, आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करती हैं । मानसिक द्वंद्व, तनाव, कुण्ठा संघर्ष आदि के कारण प्रायः समस्त साठोत्तर युग की कृतियों में मूल्यों का विघटन, सेक्स स्वातंत्र्य, मध्यकालीन जीवन मूल्यों तथा संस्कारों पर चोट करते हुए व्यक्ति के अजनबीपन, अकेलेपन तथा परिवार टूटन व व्यक्ति घुटन का चित्रण किया । "अँधेरे बंद कमरे", अन्तराल, न आने वाला कल, डाक बंगला, आपका बंटी, बेघर, सहचारिणी आदि उपन्यासों में युगीन परिवेशगत उत्पन्न आर्थिक विषमता, महानगरीय जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं तथा जटिलताओं का चित्रण गहराई के साथ किया है । "अँधेरे बंद कमरे" में नीलिमा व हरवेश दोनों का घुटन तथा कुंठित जीवन का चित्रण है । इसीप्रकार अन्तराल की श्यामा और कुमार, मनोज और उसकी पत्नी, इरा, विमल, बतरा, शीला, शकुन, अजय, आदि पात्र आधुनिकता के बोध में जीवन-मूल्यों, दाम्पत्य जीवन को नकारते हैं । स्वच्छंद या नवृत्ति का सहज रूप में पात्र अपनाते हैं । मानव-मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों को नकारने वाले उपन्यास सूरजमुखी अँधेरे के, "सफेद मेमने" मछली मरी हुई, औरत एक-चेहरे हजार आदि उपन्यास हैं । इन उपन्यासों के पात्र व्यक्तिवादी प्रवृत्ति को अपनाते हैं । रत्ती, दिवाकर, रामौतार, पोस्टमास्टर, बन्नू, जानवरों का डक्टर, सन्दो, निर्मल पदमावत, शीरी, प्रिया, कल्याणी आदि पात्र कामगत कुंठाओं तथा सेक्स स्वातंत्र्य के आधार पर परम्परागत नैतिक तथा सम्भावित मूल्यों को नकारते हैं । अतः इस युग के उपन्यास सेक्स स्वातंत्र्य, परिवार विघटन, दाम्पत्य जीवन की विडम्बनाओं को उदघाटित व्यक्ति चेतना के आधार पर करते हैं ।

समकालीन उपन्यासों में व्यक्ति चेतना, नारी स्वातंत्र्य, शिक्षा के तथा राजनैतिक चेतना के कारण परम्परागत मूल्यों के प्रति विद्रोह की चेतना और नवीन मूल्यों का विकास हुआ । इन उपन्यासों के पात्र जागरूक हैं । अपनी आस-पास की परिस्थितियों को पहचानते हैं । राग दरबारी, सूखता हुआ तालाब, जल टूटता हुआ, आधा गांव, अलग अलग वैतरणी, धरती धन न अपना, कभी न छोड़े खेत, आदि उपन्यासों में ग्रामीण समस्या, राजनैतिक

चेतना, और अनेक असंगतियों-विसंगतियों के साथ ग्रामीण जीवन-मूल्यों, आचारों-विचारों आदि का चित्रण किया है । ये उपन्यास राजनीतिक प्रधान हैं ।

मन्नू भण्डारी का "महाभोज" और कमलेश्वर कृत "काली आंधी" सशक्त राजनीतिक उपन्यास हैं । "काली आंधी" क में नारी का सक्रिय राजनीति में भाग लेने के कारण टूटते पारिवारिक संबंधों का चित्रण किया है ।

कुछ उपन्यास ऐसे हैं, जिनमें दो प्रकार के पात्र मिलते हैं । जिनमें प्राचीन जीवन मूल्यों के प्रति संघर्ष की स्थिति निरन्तर बनी रहती है । सुरेश सिन्हा के "सुबह अंधेरे पथ का" परमात्मा बाबू, "पत्थरों का शहर" का नवल किशोर बाबू ऐसे पात्र हैं, जिनका गरिमामय व्यक्तित्व परम्परागत भारतीय संस्कारों को उभारता है । यद्यपि ये नई पीढ़ी के समक्ष टूट जाते हैं किन्तु झुकते नहीं हैं । इसी को लेकर लिखा गया उपन्यास "कोरा कागज़" (अनंत गोपाल शेवड़े) है इसमें युवा पीढ़ी का लेखक निरंजन, ईमानदारी, आत्मविश्वास, कर्तव्यनिष्ठ, धार्मिक एवं आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों के प्रति अंत तक आस्थावान् रहता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पूर्ववर्ती लेखकों ने प्राय: पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों पर बल दिया है, किन्तु धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों का क्रमश: ह्रास हुआ है । और आध्यात्मिक मूल्यों को मानवता से जोड़ा है , जबकि समकालीन लेखकों ने पारिवारिक मूल्यों के स्थान पर केवल मात्र पति-पत्नी का तनाव, पूर्ण एवं संघर्षपूर्ण चित्रण किया है । समकालीन उपन्यासकार व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों को लेकर चले हैं, जिनमें अर्थ, काम और राजनीति के कारण मध्यमवर्गीय मानव के टूटते संबंधों का चित्रण मुख्य रूप से मिलता है और इस युग में व्यक्ति चेतना इतनी तीव्रतर होती जा रही है कि इससे मानव-मूल्यों तथा नैतिक मर्यादाओं में विघटन की स्थिति आई । यही कारण है कि सन् 1960 के पश्चात् मानव जीवन ,पद्धति ,प्रक्रिया, विचार धारा, चिन्तन, संस्कार, व्यवहार, जीवन-मूल्य तथा दृष्टिकोण में अन्तर आया और व्यक्ति मन बाह्य तथा अन्तर्द्वन्द्व संघर्ष, घुटन, टूटन, अनास्था आदि भावों से भर गया । जिसके प्रभाव ने व्यक्तिगत जीवन-मूल्यो को आकर्षित किया ।

"संदर्भ - सूची"

1- डा0 राम गोपाल सिंह चौहान : आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृष्ठ 265
2- कमलेश्वर : डाक बंगला, पृष्ठ 31
3- निर्मल वर्मा : वे दिन, पृष्ठ 211
4- निर्मल वर्मा : वे दिन, पृष्ठ 211
5- डा0 इन्द्रनाथ मदान : आज का हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ 101
6- राजकमल चौधरी : मछली मरी हुई, पृष्ठ 17
7- राही मासूम रजा: आधा गांव - प्रकाशकीय वक्तव्य, पृष्ठ 7
8- डा0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय :द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 126
9- राही मासूम रजा : आधा गांव, पृष्ठ 19
10- उपरिवत् पृष्ठ 19
11- डा0 कुंवर सिंह : हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना , पृष्ठ 175
12- सुरेश सिन्हा : सुबह अंधेरे पथ पर , पृष्ठ 64
13- उपरिवत् पृष्ठ 227
14- उपरिवत् पृष्ठ 227
15- उषा प्रियवंदा : रूकोगी नहीं ...राधिका , पृष्ठ 37
16- मोहन राकेश : अन्तराल , पृष्ठ 51
17- गिरिराज किशोर : चिड़ियाघर , पृष्ठ 45
18- ,, उपरिवत् ,, पृष्ठ 96
19- डा0 ज्ञान चन्द्र गुप्त :आंचलिक उपन्यासों में सम्वेदना और शिल्प, पृष्ठ 81
20- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 185
21- उपरिवत् पृष्ठ 411
22- उपरिवत् पृष्ठ 249
23- उपरिवत् पृष्ठ 338

24- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी, पृष्ठ
25- उपरिवत् , पृष्ठ 100
26- राम दरश मिश्र - जल टूटता हुआ, पृष्ठ 353-54
27- सुरेश सिन्हा : पत्थरों का शहर, पृष्ठ 40
28- उपरिवत् पृष्ठ 41
29- उपरिवत् पृष्ठ 80
30- उपरिवत् पृष्ठ 210
31- उपरिवत् पृष्ठ
32- मणि मधुकर : सफेद मेमने, पृष्ठ 76
33- उपरिवत् पृष्ठ 57
34- कृष्णा सोबती : सूरजमुखी अँधेरे के , पृष्ठ 53
35- राम दरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब, पृष्ठ 135
36- जगदीश चन्द्र : धरती धन न अपना, पृष्ठ 8
37- उपरिवत् पृष्ठ 99
38- जगदम्बा प्रसाद दीक्षित = मुरदाघर, पृष्ठ 21
39- उपरिवत् पृष्ठ 43
40- जगदीश चन्द्र : कभी न छोड़े खेत, पृष्ठ 105
41- मालती जोशी : सहचारिणी , पृष्ठ 47 §धर्मयुग से§

-::-